तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १ रुपया

दीवाना



चिल्ली लीला



दीवानी चिपकी काटिये और चिपका

आराम हराम है

और हराम की कमाई हम सबको फलती



प्रेम पत्र

जनाब ज़िया साहेब

सलामआलेकुम !

हिन्दुस्तानियों ने बड़े-बड़े शहंशाह देखें हैं। अब पाकिस्तान की बारी है। बेचारे शाहआलम तो अपनी अकड़ में चले गए अब तुम्हारी बारी है। अरे मियां, बुरा न मानना मेरी तो आदत ही सच्ची बात कहने की है। ना मुझे आपसे कुछ लेना है ना भुट्टो को कुछ देना है।

पर मियाँ आपने फंदा बड़ा सोच समझके तैयार किया है। गले में तो इस वक्त भी मियां भुट्टो के पड़ा है पर फँसा हुआ आपके गले में है। ना तो आपसे उगले बन रहा है ना निगले बन रहा है। मियां तैयारी करते वक्त अपना मुस्तकबिल तो सोच लिया होता। पर सोच समझ तो शहंशाहों के पल्ले में कभी-पड़ी ही नहीं आपको अल्लाह ताला कैसे यह बखशते ?

पर मैं आपको अपनी अक्ल उधार देने को तैयार हूँ। मांगोगे तो मिल जाएगी, शर्तिया आपके मर्ज का इलाज भी कर दूंगा। मैंने हिन्दुस्तान में बड़े-बड़े मजमे लगाए हैं। इन्दिरा गान्धी को फांसी दो के नारे भी सुने हैं। पर करा वही जो अक्ल ने सुझाया। मियां भुट्टो को अगर आप आवाम के हवाले कर दें तो आप का फदां खुल जाएगा। पर मुझे शक है आप मेरी अक्ल उधार लेने के बजाए अपने भूसे पर ज्यादा ऐतबार करेंगे।

खैर आपकी चिट्ठी का इन्तजार रहेगा

आपका

चिल्ली

मुख पृष्ठ पर

ांकने की आदत से
 अगर तुम मजबूर,
द वाला डिब्बा पहनकर
खो-चाहे घूर-घूर।
हचाने न तुमको कोई
म-चाहे देखो जिसको,
ल्ली को तो सब जाने हैं
सका नाम बतायें किसको।



वाना

१५ ८ मार्च से १४ मार्च ७९ तक
वर्ष : १५

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाही: २५ रु०
वार्षिक: ४८ रु०
द्विवार्षिक: ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के



सीताराम अग्रवाल, परतवाड़ा (अमरावती)

प्र० : मेरी प्रेमिका सामने तो रहती है, लेकिन मुलाकात नहीं हो पाती, क्या करूं ?

उ० : नहीं देखती वह तुम्हें, मन में है कुछ रोष,
पूछो अपने आप से, क्या है मुझ में दोष ?

पवन कुमार अग्रवाल, गांधी धाम (कच्छ)

प्र० : संगीत में जादू है, यह कैसे माना जाये ?

उ० : किसी फिल्म का जब कोई, हिट हो जाता गीत।
रिक्शेवाले गा रहे, जादू है संगीत ॥

रोशन व्यास त्यागी, इंदौर (म० प्र०)

प्र० : मन की बात कौन जान सकता है ?

उ० : तुमको खुद मालूम है, जिससे करते प्रीत,
अथवा मन की बात को, जाने मन का मीत।

द्वारका प्रसाद गोयल, भारापारा (म० प्र०)

प्र० : नारी को आप भी 'अबला' मानते हैं क्या ?

उ० : हमने उसको छोड़ दिया, अबला समझकर,
उसने हमको पीट दिया, तबला समझकर।

हेमन्त सुंहाल का, चित्तौर गढ़ (राज०)

प्र० : मैं आपको एक उस्तरा भेंट करना चाहता हूं, स्वीकारेंगे ?

उ० : लटका रक्खे आपने, हीरो जैसे बाल,
कर देंगे सिर सफाचट, पछताओगे लाल।

मनोहर लाल मोटवानी, रायगढ़ (म० प्र०)

प्र० : उधार प्रेम की कैंची है तो नकद ?

उ० : वह उधार दे दे तुम्हें, तो बेचारा रोय,
नकद आप दे दो उसे, खाली पॉकिट होय।

मनीष ठाकरे, झाबुआ (म० प्र०)

प्र० : पुरुष की दो स्त्रियां आपसी रिश्ते में सौत कहलाती हैं ? यदि कोई स्त्री दो पुरुष रखे तो उनका रिश्ता क्या होगा ?

उ० : नारी से नारी लड़े, तू है मेरी सौत,
नर आपस में लड़ मरें, वह रिश्ता है मौत।

ईश्वर दास विस्फोट, तिनसुकिया (आसाम)

प्र० : कविता करने लग गए, कवि विस्फोटक दास,
अखबारों में नहिं छपे, चेहरा हुआ उदास।

उ० : छोड़ निराशा, उदासी, करते रहु विस्फोट,
करो प्रतीक्षा किसी दिन, बैठ जायेगी गोट।

जग्गी दुआ, मॉडल टाउन, करनाल

प्र० : प्रेम के झटके और बिजली के झटके में क्या फर्क है ?

उ० : एलेक्ट्रिक के शॉक से, किसी तरह बच जाय,
झटका लागे इश्क का, तड़प-तड़प मर जाय।

रमेश कुमार अग्रवाल, चिरकुंडा (बिहार)

प्र० : आप प्रश्नों के उत्तर कविता में ही क्यों देते हैं ?

उ० : उत्तर देने के लिए, लिखते हैं अब गद्य,
आदत से मजबूर हैं, बन जाता है पद्य।

प्रीतम० जे० हरचंदानी, उल्हास नगर (थाना)

प्र० : चाट खाने के लिए, बच्चा एक-दो रुपये ले जाता है, तो उसे फिल्म देखने में खर्च क्यों कर देता है।

उ० : उसे पढ़ाते मित्रगण, कुछ ऐसा ही पाठ,
है आलू की चाट से बहतर फिल्मी चाट।

सुधीर श्रीवास्तव, मुजफ्फरपुर

प्र० : निगाहे नाज की, उस इक अदाने लूट लिया,
वफा के वेष में, उस बेवफा ने लूट लिया।

उ० : कुछ शायरों से हमने सुना है कहीं कहीं,
लुटने में जो मजा है, लूटने में वह नहीं।

बालचंद कुकरेजा, लश्कर (ग्वालियर)

प्र० : काका जी, आपके हास्य के साथ काकी जी क्या भूमिका निभाती हैं ?

उ० : टेढ़ी-मेढ़ी बात पर, आपस में ठन जाय,
उनकी इक फटकार से, झट कविता बन जाय।

अजीत सिंह लाट, टाटानगर

प्र० : काका, कल रात सपने में देखा तो आप कारतूस की बजाय गोलियां चला रहे थे ?

उ० : बच्चे करते प्रश्न जब, बोलें मीठी बोलियां,
मीठी मीठी बाँटते, हम टॉफी की गोलियां।

नरेन्द्र कुमार निब्बी, कपूरथला

प्र० : पत्नी से जब पति घबरा जाता है तो क्या सोचता है ?

उ० : दार ला, दरिया ला, लहँगा ला, फरिया ला,
लाली की ला-ला से, लाला घबरायो जी।
जासों हम रंडुआ भले, रोटी से लडुआ भले,
बैठकर अकेले नित्त, गप्प-गप्प खाओ जी।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

काका के कारतूस
८-बी बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली ११०००२

पॉपिन्स के कागज़ी कारनामे

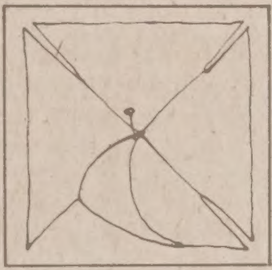
ये हैं बच्चो राम और श्याम

जो बातें नयी बतायेंगे
कागज़ की सुन्दर-सुन्दर चीज़ें
बनाना तुम्हें सिखवायेंगे

फिर-फिर फिरती फिरफिरी
ज़रूरी सामान: पतले कार्ड बोर्ड का चौकोर टुकड़ा, कैंची, कील या पिन, हथौड़ी, बटन, बांस की लकड़ी, पेंसिल फुटपट्टी.



बनाने का तरीका:
पहले चौकोर कार्ड बोर्ड पेपर पर एक कोने से दूसरे कोने तक की दो तिरछी रेखाएं खींच लो. फिर उन रेखाओं पर से उसे बीच की तरफ ठीक आधी दूरी तक काटो. इस बात का ख्याल रखना कि ये आधी दूरी से कहीं ज़्यादा न कट जाय.



अब हर कोने को बीच की तरफ मोड़ो और सबको एक साथ पकड़कर पिन या कील उसमें इस तरह से चुभाओ कि नुकीला हिस्सा दूसरी तरफ निकल जाय.



इसके बाद पिछली तरफ बटन पिरो लो और कील को बांस की लकड़ी में ठोंक दो. अब हवा का रुख देखो और फिरफिरी को फिरने दो. मज़ा आ जायेगा.







पारले पॉपिन्स

फलों के स्वादवाली गोलियां
रसीली... प्यारी... मज़ेदार

५ फलों के स्वाद—
रासबेरी, अननास,
नींबू, नारंगी व मोसंबी.

everest/78/PP/247-hn

निर्देशक श्रीराम माहेश्वरी का

करमयोगी



मुख्य कलाकार—ताला सिन्हा, रात कुमार, लेखा, जीतेन्डल, रीना राय, अचित, खन्हैया लाल, नकसीर हुसैन, जागीरमार, जगटीप, डूमल तथा मस्ताक मर्चेन्ट

फिल्म पैरोडी कथा

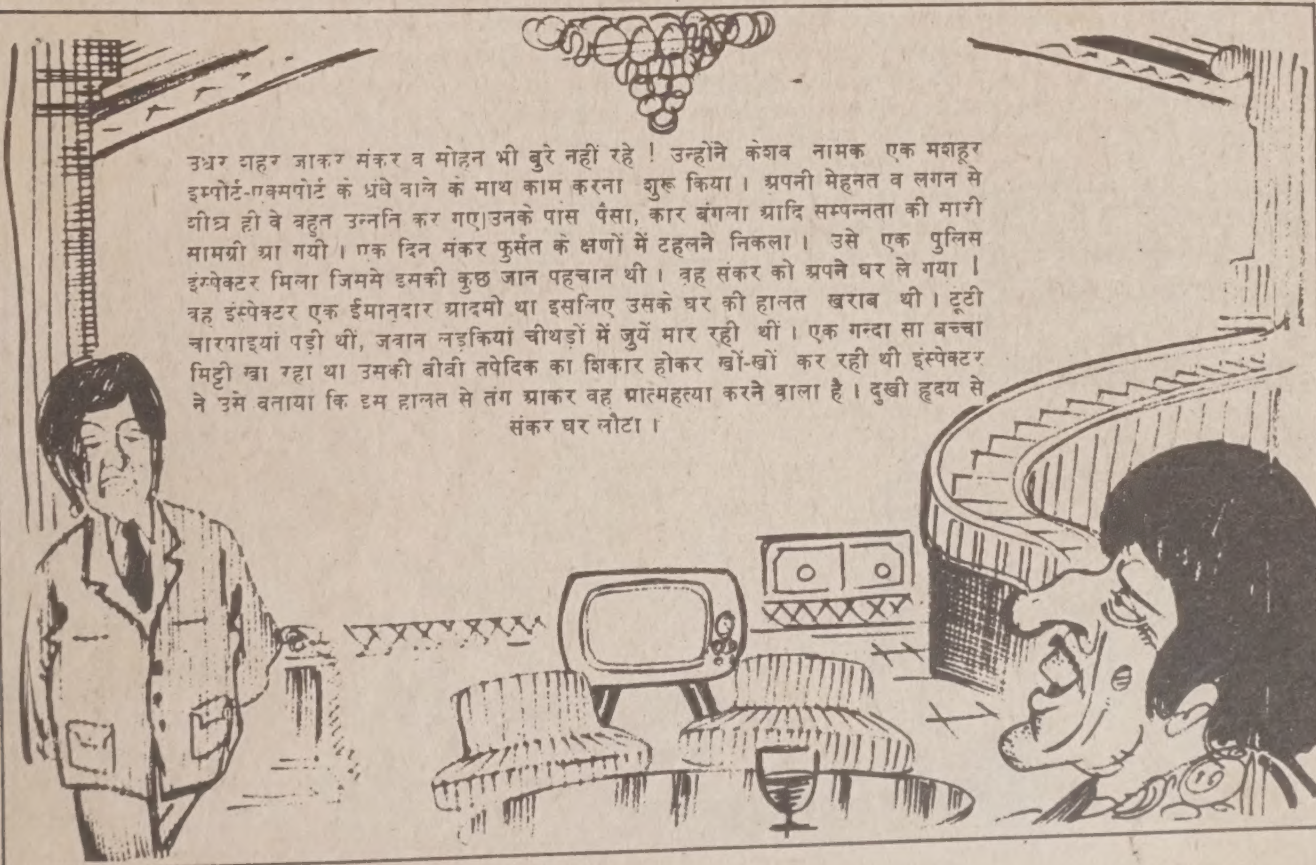
संकर (राजकुमार) श्रौर संकर की पत्नी मुर्गा (माला सिन्हा) में सैद्धान्तिक मतभेद है। संकर काम करता है श्रौर तुरन्त उसका फल चाहता है, परन्तु मुर्गा का गीता के उपदेशों पर गहरा विश्वास है। वह गीता के निष्काम भावना सिद्धान्त को मानती है। काम करना चाहिये। लेकिन उसके फल की कामना नहीं करनी चाहिये। रोटी खानी चाहिये लेकिन बदहजमी की कामना नहीं होनी चाहिये। परीक्षा देनी चाहिये लेकिन उसका फल यानि रिजल्ट नहीं देखना चाहिये। घर में स्विच श्रान रखना चाहिये श्रगर बिजली चली गयी हो तो उसकी कम्पलेंट नहीं करनी चाहिये। दुकानदार को पैसे देने चाहियें लेकिन सामान नहीं लेना चाहिये।

संकर ऐसी कूढ़मगज बीबी को पाकर बहुत दुखी थी। उसने कई बार उसे दुनियादारी श्रौर श्राधुनिक समाज के चाल-चलन को समझाने की कोशिश की। पूंजीवाद तथा मजदूरों के शोषण की बातें बताईं लेकिन दुर्गा की खोपड़ी में निष्काम भावना का प्रिंसीपल बुलडॉग की तरह चौबीस घंटे खड़ा रहता था। श्रक्ल की कोई बात घुसने नहीं देता था। समझाते-समझाते संकर के जबड़ों में दर्द होने लगा था। डाक्टरों ने संकर को सलाह दी कि वह ऐसी श्रौरत के साथ न रहे वर्ना जल्दी ही उसके सिर पर खच्चर वाले बाल उग श्रायेंगे। मुँह उसे समझाते-समझाते इतना थक जायेगा कि विरोध में खाने की क्लीयरिंग करने से बैंक वालों की तरह इन्कार कर देगा। विवश होकर संकर को श्रपनी पत्नी को छोड़कर शहर जाकर किस्मत श्राजमाने का फैसला करना पड़ा। संकर श्रपने साथ श्रपने बेटे मोहन को भी ले जाता है। मुर्गा दूसरे बेटे संजय को श्रपने पास ही रखती है ताकि वह गीता के निष्काम भाव सिद्धान्तों पर पाल सके। यह एक कम्पीटीशन था।



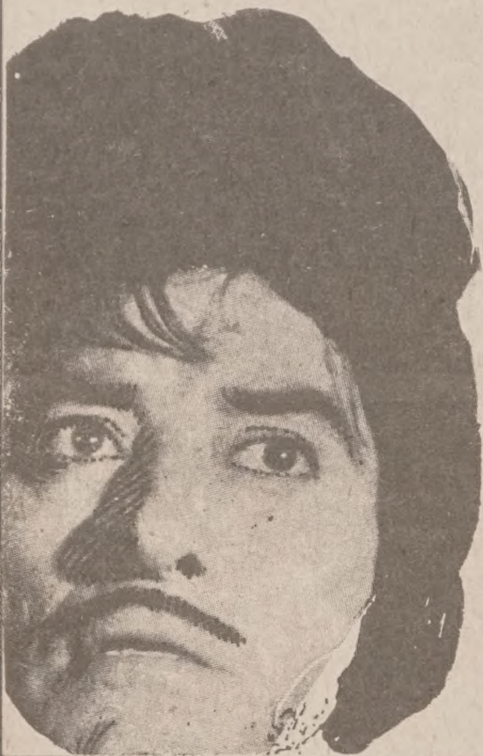
पति के जाने के बाद मुर्गा को पहले तो कठिनाई हुयी लेकिन जल्दी ही उसकी हालत सुधर गई। वह बहुत मौज से रहने लगी। लड़का संजय भी अच्छे स्कूल में जाने लगा और उसके भविष्य में आगे उच्च शिक्षा की योजनायें बनने लगीं। मुर्गा ने पुराना मकान तुड़वा कर उसकी जगह सिंगल यूनिट १६ बैडरूम, दो ड्राइंग डाइनिंग एटैच्ड बाथ्‌रूम टॉयल वाले और मारी फ्लोरिंग मार्बल चिप्स की बनवाई। आप सोच रहे होंगे कि जो काम करके फल के सिद्धान्त में विश्वास नहीं रखती उसे तो भूखों मरना चाहिए था उल्टे इतनी माया कहां से आ गई। बात यह हुयी कि मुर्गा की बेवकूफी की चर्चा देश के प्रमुख पूंजीपति बिरला और टाटा तक पहुँची, उन्हें मुर्गा में अपने पूंजीवाद का सुनहरा भविष्य दिखाई दिया। क्योंकि अगर मुर्गा का फार्मूला लागू कर दिया जाये तो मजदूरों को काम करना चाहिए मजदूरी नहीं मांगनी चाहिए, बोनस और महंगाई भत्ते की बात तो दूर रही ! मजदूरों को पैसे नहीं देने पड़ेंगे तो सारा पैसा उनकी तिजोरियों में और एक दिन वह पूरी तरह सारे हिन्दुस्तान को खरीद कर खा जायेंगे। निष्काम भाव सिद्धान्त की महानता साबित करने के लिए यह जरूरी था कि मुर्गा का जीवन सुख, शांति व रुपये पैसे से भरपूर किया जाए ताकि लोग अपनी आंखों से देख सकें। दोनों ने हजारों रुपयों की थैलियां जब तब चुपके-चुपके मुर्गा के घर फेंकनी शुरू कर दीं। मुर्गा समझती रही कि बिन मांगें अपने आप फल मिल रहा है।





उधर शहर जाकर संकर व मोहन भी बुरे नहीं रहे ! उन्होंने केशव नामक एक मशहूर इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट के धंधे वाले के साथ काम करना शुरू किया। अपनी मेहनत व लगन से शीघ्र ही वे बहुत उन्नति कर गए। उनके पास पैसा, कार बंगला आदि सम्पन्नता की सारी सामग्री आ गयी। एक दिन संकर फुर्सत के क्षणों में टहलने निकला। उसे एक पुलिस इंस्पेक्टर मिला जिससे इसकी कुछ जान पहचान थी। वह संकर को अपने घर ले गया। वह इंस्पेक्टर एक ईमानदार आदमी था इसलिए उसके घर की हालत खराब थी। टूटी चारपाइयां पड़ी थीं, जवान लड़कियां चीथड़ों में जुयें मार रही थीं। एक गन्दा सा बच्चा मिट्टी खा रहा था उसकी बीवी तपेदिक का शिकार होकर खों-खों कर रही थी इंस्पेक्टर ने उसे बताया कि इस हालत से तंग आकर वह आत्महत्या करने वाला है। दुखी हृदय से संकर घर लौटा।

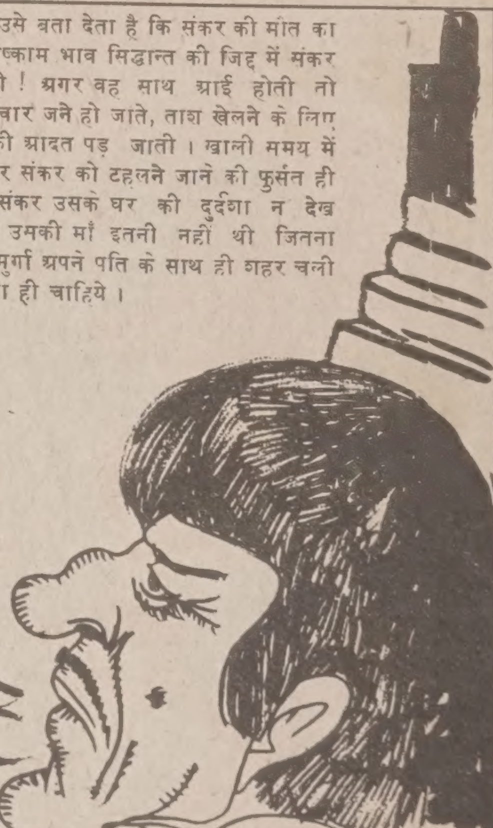
दूसरे ही दिन उस इन्स्पेक्टर का आत्महत्या की खबर आई। संकर को यह सोच कर दिल का दौरा पड़ा कि देखो आज भी दुनिया में ऐसे-ऐसे अहमक हैं। जो ईमानदारी पर विश्वास रखते हैं,खुद तो मरते ही हैं साथ में बीबी बच्चों को भी मरवा देते हैं। संकर को यह गम मार गया। संकर की मृत्यु पर बेटा मोहन बहुत दुखी हुआ। दुख के उन क्षणों में सांत्वना पाने वह अपनी प्रेमिका लेखा के पास गया। लेखा ने मोहन को समझाया कि संकर की मौत का जिम्मेदार उसका बॉस केशव ही है। हर स्मगलर बॉस अपने आदमियों के मनोरंजन के लिये अपने अड्डे पर प्रायः नर्तकी का नाच रखता है। अगर वह भी और फिल्मों के बॉसों की तरह अड्डे पर हैलन, पद्मा खन्ना या जयश्री टी० का डांस रखता तो संकर को टाइम पास करने के लिये टहलने न जाना पड़ता और न उसकी उस पुलिस इन्स्पेक्टर से मुलाकात होती, न वह दौरा पड़ता। मोहन समझ गया। बॉस से बदला लेने चल पड़ा।

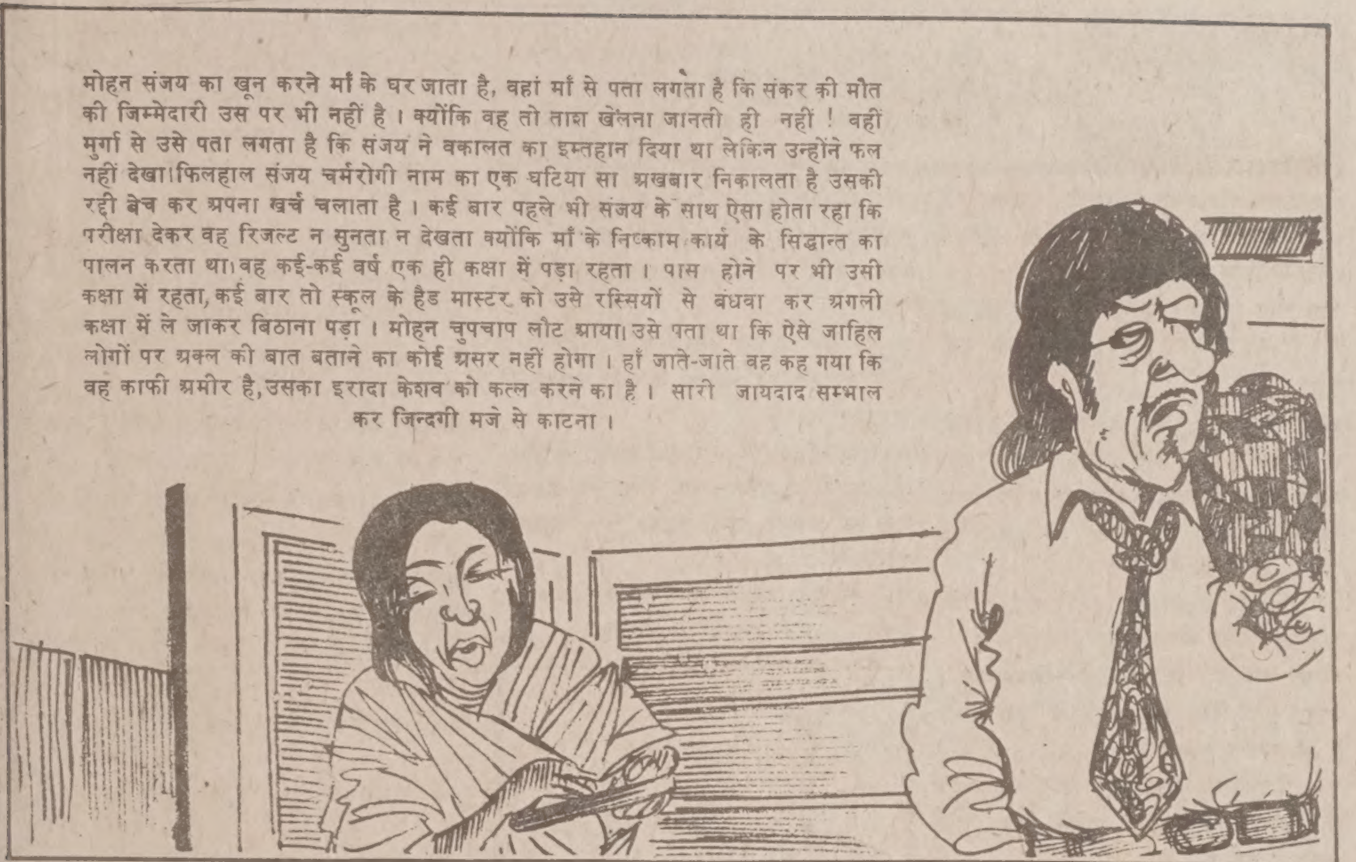


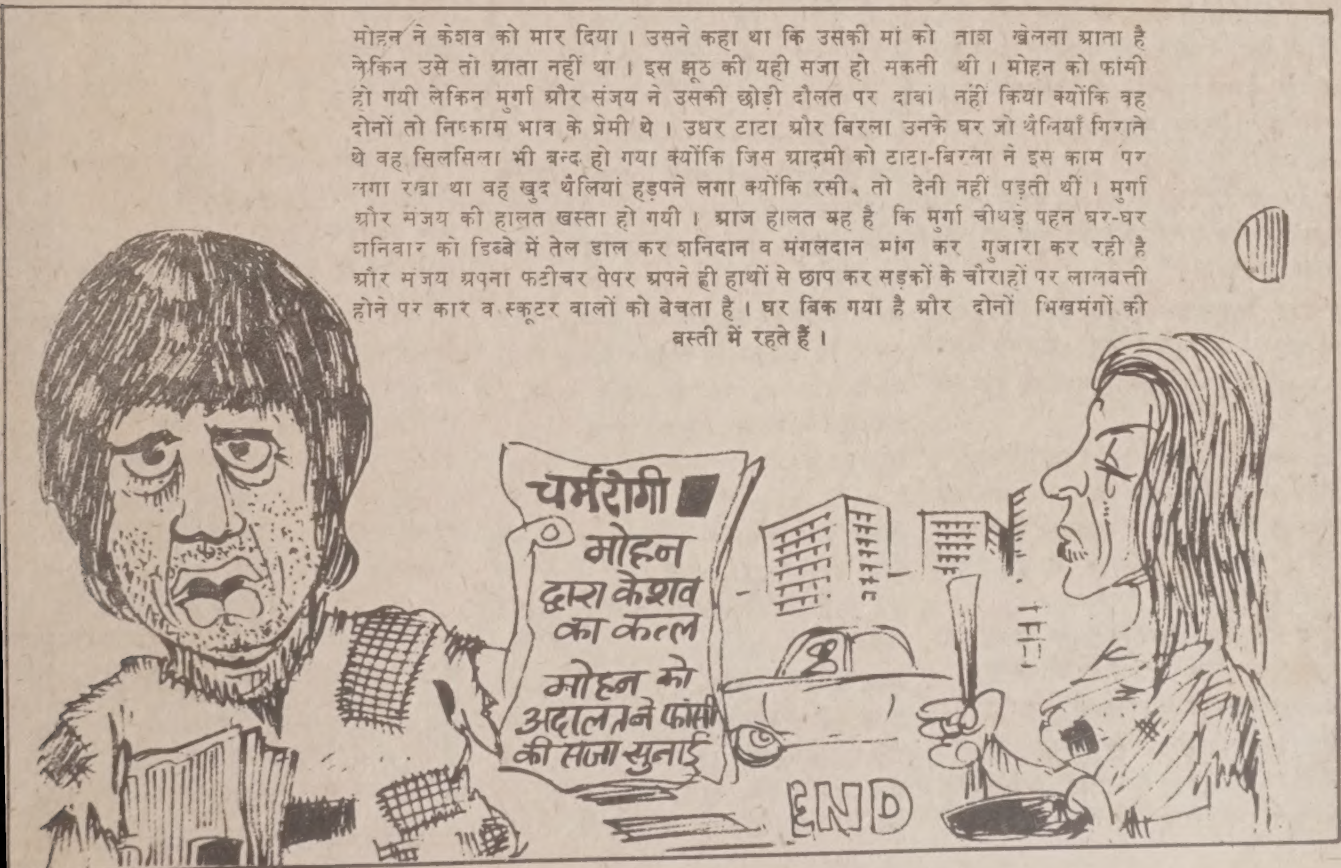


बॉस,केशव मोहन की बात ध्यान से सुनता है और उसे बता देता है कि संकर की मौत का जिम्मेदार वह नहीं बल्कि उसकी मां है जो अपने निष्काम भाव सिद्धान्त की जिद्द में संकर के साथ शहर नहीं चली आई बल्कि गाँव में ही रही! अगर वह साथ आई होती तो संजय भी साथ आ जाता इस प्रकार उनके घर में चार जने हो जाते, ताश खेलने के लिए चार जनों की जरूरत होती है। उन्हें ताश खेलने की आदत पड़ जाती। खाली समय में सारा परिवार साथ बैठ कर ताश खेलता रहता और संकर को टहलने जाने की फुर्सत ही नहीं मिलती। वह इन्स्पेक्टर कभी न मिलता और संकर उसके घर की दुर्दशा न देख पाता। बात सोहन के समझ में आ गयी। अपराधी उसकी मां इतनी नहीं थी जितना उसका भाई संजय, अगर संजय न होता तो शायद मुर्गा अपने पति के साथ ही शहर चली आती! संजय का खून करना ही चाहिये।






मोहन संजय का खून करने माँ के घर जाता है, वहां माँ से पता लगता है कि संकर की मौत की जिम्मेदारी उस पर भी नहीं है। क्योंकि वह तो ताश खेलना जानती ही नहीं ! वहीं मुर्गा से उसे पता लगता है कि संजय ने वकालत का इम्तहान दिया था लेकिन उन्होंने फल नहीं देखा। फिलहाल संजय चर्मरोगी नाम का एक घटिया सा अखबार निकालता है उसकी रद्दी बेच कर अपना खर्च चलाता है। कई बार पहले भी संजय के साथ ऐसा होता रहा कि परीक्षा देकर वह रिजल्ट न सुनता न देखता क्योंकि माँ के निष्काम कार्य के सिद्धान्त का पालन करता था। वह कई-कई वर्ष एक ही कक्षा में पड़ा रहता। पास होने पर भी उसी कक्षा में रहता, कई बार तो स्कूल के हैड मास्टर को उसे रस्सियों से बंधवा कर अगली कक्षा में ले जाकर बिठाना पड़ा। मोहन चुपचाप लौट आया। उसे पता था कि ऐसे जाहिल लोगों पर अक्ल की बात बताने का कोई असर नहीं होगा। हाँ जाते-जाते वह कह गया कि वह काफी अमीर है, उसका इरादा केशव को कत्ल करने का है। सारी जायदाद सम्भाल कर जिन्दगी मजे से काटना।


मोहन ने केशव को मार दिया। उसने कहा था कि उसकी मां को ताश खेलना आता है लेकिन उसे तो आता नहीं था। इस झूठ की यही सजा हो सकती थी। मोहन को फांसी हो गयी लेकिन मुर्गा और संजय ने उसकी छोड़ी दौलत पर दावा नहीं किया क्योंकि वह दोनों तो निष्काम भाव के प्रेमी थे। उधर टाटा और बिरला उनके घर जो थैलियाँ गिराते थे वह सिलसिला भी बन्द हो गया क्योंकि जिस आदमी को टाटा-बिरला ने इस काम पर लगा रखा था वह खुद थैलियां हड़पने लगा क्योंकि रसीद तो देनी नहीं पड़ती थीं। मुर्गा और संजय की हालत खस्ता हो गयी। आज हालत यह है कि मुर्गा चीथड़े पहन घर-घर शनिवार को डिब्बे में तेल डाल कर शनिदान व मंगलदान मांग कर गुजारा कर रही है और संजय अपना फटीचर पेपर अपने ही हाथों से छाप कर सड़कों के चौराहों पर लालबत्ती होने पर कार व स्कूटर वालों को बेचता है। घर बिक गया है और दोनों भिखमंगों की बस्ती में रहते हैं।
चर्मरोगी
मोहन द्वारा केशव का कत्ल
मोहन को अदालत ने फांसी की सजा सुनाई
END

आपस की बातें
चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

चन्द्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार : अंकल जी, यदि मरना जीना आपके अधिकार क्षेत्र में होता तो आप क्या करते ?

उ० : तब भी यही करते जो अब कर रहे हैं और लोग हमारे बारे में तब भी यही कहते :

हंस हंस के जो हर बात को अफसाना बना दे,
वो तो जिसे चाहे उसे दीवाना बना दे।

महेन्द्र कुमार पाण्डेय—कलकत्ता : क्या आप स्वीकृत रचनाओं की सूचना भी लेखकों को वापसी की भांति देते हैं ?

उ० : जी हां, इसके लिये हमारे यहां देर भी नहीं और अंधेर भी नहीं।

रमेश पसारी बोकाखात—शिवसागर : जलता हुआ दिया फूंक मारने से बुझ जाता है, तो जलता हुआ दिल ?

उ० : आंखों का फायरब्रगेड पानी बहाये तो और भड़क उठता है ? इसके लिए एक शायर ने कहा है—

बहना कुछ अपनी चश्म का दस्तूर हो गया,
दी थी खुदा ने आंख सो नासूर हो गया।

अशोक कुमार मोंगा—फरीदकोट : 'राम नाम जपना पराया माल अपना' यह कहां तक सच है ?

उ० : पता नहीं, आज तक तो आपने कभी हमारे हाथ को अपनी जेब में जाने की अनुमति नहीं दी।

संजय, राजकुमार—गोहद : विवाहित स्त्री की पहचान है, मांग में सिंदूर, पांव में बिछवे और गले में मंगल सूत्र। विवाहित पुरुष की पहचान ?

उ० : हाथ में मिट्टी के तेल की खाली बोतल।

प्रदीप कुमार—अम्बिकापुर : क्या आप बता सकते हैं कि आप कितने बुद्धिमान हैं ?

उ० : जितना हमने अपने को बुद्धू मान लिया है।

जगत नारायण—नागपुर : क्या आप बता सकते हैं कि आप किस से दूर भागते हैं ?

उ० : बड़ा टेढ़ा सवाल किया है आपने, हम 'जगत' में किसी से दूर नहीं भागते। 'नारायण' हमें अपने पास नहीं आने देते। विश्वास न हो तो राज नारायण, जय प्रकाश नारायण या प्रेमा नारायण से पूछ लीजिये।

नवरतन प्रसाद वर्मा—गोला बाजार : मुझे एक लड़की की जरूरत है, बताइये मैं क्या करूं ?

उ० : आप पुलिस स्टेशन और अस्पताल दोनों के पास रहें क्योंकि आपको लकड़ी की जरूरत है।

नवराज अधिकारी—विराट नगर, नेपाल : दीवाना में अपने प्रश्न का उत्तर न देखकर मेरा सर चक्कर खाने लगता है। बताइये क्या करूं ?

उ० : जितना आपका सर चक्कर खाता है, उतना ही आप हमारा सर खाइये।



याद के. सुगन्ध—रिवाड़ी : चाचा जी, अब आप काफी बूढ़े हो गये हैं। अतः अपने उत्तराधिकारी का चुनाव कीजिये। क्या ख्याल है ?

उ० : ख्याल तो नेक है। पर इसमें चक्कर एक है कि जैसे 'बिन्नी क्लाथ मिल्ज' वाले एक डिजाइन की एक ही साड़ी बनाते हैं, ऐसे ही 'भगवान मनुष्य मिल्ज' ने एक डिजाइन का एक ही चाचा बातूनी बनाया है।

तिलक राज 'कमल'—अबोहर : इन्सान की सबसे बड़ी मजबूरी क्या है ?

उ० ; यही, कि वह अपनी मर्जी से इन्सान नहीं बना।

सुरेश सुराना—जीन्द : इस बात की खुशी है कि अब दीवाना समय पर मिलने लगा है। क्या यह खुशी बनी रहेगी ?

उ० : अवश्य बनी रहेगी।

विजय राय—भरिया : चाचा जी, आपने जीवन में कौन-सा महत्वपूर्ण काम किया है ?

उ० : लोगों के दुःख दर्द का भट्टा बिठाने के लिए दीवाना को अधिक से अधिक मनोरंजक बनाया है। कहिये, यह भट्टा बिठाने के अपराध में आप हम पर शाह कमीशन तो नहीं बिठायेंगे ?

सुरेन्द्र प्रजापत 'राही'—लालगढ़ : क्या आपने परिवार नियोजन के दो या तीन और बस के नारे का पालन किया है ?

उ० : जी नहीं, पहले हमारे दीवाने थे दो, तीन और अब हैं बीस लाख।

प्रेमसुख चोपड़ा—गंगाशहर : अपने पराये कब हो जाते हैं ?

उ० : जब आप किसी को अपनी थाली में हाथ देने से रोक देते हैं।

अकरम खान कोहरी—बीकानेर : जमाने के ठुकराये हुओं को कौन सहारा देता है ?

उ० : कोई भी नहीं। किसी शायर ने कहा है :

गरूर अब क्या बढ़ेगा खम हुए इस दर्जा पीरी में,
हम अपने सर को अपने पांव से ठोकर लगाते हैं।

कृष्ण लम्साल—मंगलापुर, नेपाल : उत्तर देने के लिए आप किस प्रकार के प्रश्नों का चुनाव करते हैं ?

उ० : जो नये, मनोरंजक और फड़कते हुए हों।

शकील हैदर—गार्डेन रीच, कलकत्ता : चाचा जी क्या बेकार आदमी भी किसी के काम आ सकता है ?

उ० : जी हाँ, बेकार आदमी कार वालों की बिगड़ी कार को धक्का लगा सकता है।

रविन्द्र कुमार—मलावाला : चाचा जी, यह बताने की कृपा करें कि अच्छे लोगों को भगवान जल्दी क्यों उठा लेता है ?

उ० : पता नहीं, वैसे यह प्रश्न पूछने से आप का मतलब कहीं यह तो नहीं है कि भगवान ने अब तक हमें नहीं उठाया है, इसलिये हम अच्छे आदमी नहीं हैं।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

परोपकारी



ये कौन अकेला बैठा है इस वक्त बाग में ?
यह तो बड़ा उदास लगता है. कुछ ऐसी बात करनी चाहिए जिससे यह हंस पड़े और इसकी उदासी दूर हो सके ।
अच्छा बेटा, यह तो बताओ कि अगर कौये की दो टांगें और खरगोश की चार टांगें जमा करो तो
मेरी उम्र क्या होगी भला ?
तीस साल !
हैं, तुमने तो मेरी सही उम्र बता दी । तुम्हें कैसे पता लगा भला ?
ऐसा है कि मेरे साथ वाले घर में एक पन्द्रह साल का लड़का है और वह आधा पागल है ।
THE NATIVE



बातें बात की
अब मेरी और कंवलबीर की शादी नहीं हो सकती !
क्यों क्या तुमने उसे किसी और लड़की के साथ देखलिया?
नहीं, लेकिन कंवलबीर ने मुझे मोकाम के साथ देख लिया था।

नया धारावाहिक उपन्यास (भाग-११)

सुबह का तारा

लेखक—संगीता

इस बात का भी प्रमाण था कि नादिर खां की पत्नी के साथ सुशील के अनुचित सम्बन्ध थे और इस बात के भी प्रमाण थे कि सुशील ने नादिर खां को जान से मारने की धमकी दी थी। सारी गवाहियां मौजूद थीं, अधिक बहस इसलिए न हो सकी कि सुशील जुर्म का इकबाल कर चुका था। जज जिस समय फैसला सुना रहा था, रंजन और मधु अदालत में मौजूद थे। फैसला सुनते ही रंजन को होश नहीं रहा था और मधु पथराई नजरों से देखती रह गई।

उसने कहा था—

'मुझे अब भी विश्वास नहीं होता कि हत्या आपने ही की थी?'

'नहीं मधु! हत्या मैंने ही की थी। मैं तुम्हारी बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकता था।' सुशील ने हंस कर कहा।

'लेकिन रंजन भाई—?'

'मधु!' सुशील ने कटुता से कहा, 'इस सिलसिले में तुम्हारे मुंह से उनका नाम नहीं निकलना चाहिए।'

हाई कोर्ट में अपील हुई।

'हैंग टू नैक टिल डैथ।'

अंग्रेजी का यह वाक्य भयानक दैत्य की तरह सिर पर मंडराता दिखाई देता था कानून का पहला नियम है।

'चाहे एक हजार अपराधी छूट जायें, लेकिन किसी निरपराध को सजा नहीं मिलनी चाहिए।'

रंजन के चेहरे की हवाईयां यह सोचते ही उड़ जाती थीं।

'फांसी—सुशील—तो?'

पानी की तरह पैसा बहता रहा लेकिन सुशील को बचाया न जा सका।

अब एक ही आशा थी—हैवियस कार्पस।

और इसी आशा पर सुशील को आशा थी कि वह मधु को अपना सकेगा।

लेकिन एक दिन पता चला कि हैवियस कार्पस भी नामंजूर हो गया।

मुकदमे में दो वर्ष लग गये।

'अब किसी भी दिन फाँसी हो सकती है' सुशील ने सोचा और इससे पहले कि फाँसी हो, मुझे अपने कर्तव्य का पालन कर लेना चाहिए।

उसने एक लम्बा पत्र लिखा। मधु के नाम। उसमें लिखा—मधु,



जी चाहता है वे सारे सम्बोधन लिख दूं जिनसे मेरा प्यार प्रकाश की किरणों की तरह छनता। लेकिन ऐसा लगता है कि प्यार के लिए शब्दों के आईने धुंधले होते हैं। सही तस्वीरें उभर नहीं पातीं। जो आग, जो तूफान, जो बेचैनी, जो धड़कन, जो जलन तथा जो कसक दिल में होती है उसे प्रिय, डियर, मेरी जान और मेरी आत्मा कह कर प्रकट नहीं किया जा सकता, इसलिए मैं तुम्हें केवल मधु कह कर सम्बोधित कर रहा हूं।

मेरे और मौत के बीच सिर्फ इतनी दूरी रह गई है जो कि केवल आंसू और पलकों के बीच होती है। इसलिए चाहता हूं कि आज तुमसे जी खोल कर बातें कर लूं।

मुझे तुमसे प्यार था, प्रेम नहीं। क्योंकि प्रेम घृणा में बदल सकता है लेकिन प्यार शाश्वत होता है। हम लोग पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानते हैं। लगता है, जैसे हम जन्म-जन्मान्तर से साथ थे। विश्वास रखो, फाँसी पाने के बाद मैं स्वर्ग में जाऊंगा। स्वर्ग के दरवाजे पर मेरी आत्मा तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहेगी। भला वह स्थान मेरे लिये स्वर्ग कैसे हो सकता है जहाँ मेरी मधु न हो।

इसलिये यह न सोचना कि मैं तुम्हें किसी भी पल भूल सकूंगा। तुम तो मेरी याद हो जो जीवन में भी और मरने के बाद भी जीवित रहती है।

आज इस तंग कोठरी में जहां कभी-कभी सूरज की किरणें झांक लेती हैं, जहां घुटन है और अंधेरा है, वहां तुम्हारी याद के चिराग की रोशनी में मुझे जीवन अत्यधिक सुन्दर दिखाई देता है। ऐसा लगता है कि जैसे मैं एक सफर हूं जिसे मृत्यु कहा जाता है, यह भी तो एक सफर है।

यह सफर पूरा हो जायगा। थक कर अगर सुस्ताने बैठ जाओ तो बड़ी तकलीफ होती है। आराम के साथ। मुझे भी तकलीफ होती शायद। लेकिन इस अंधेरे में भी तुम्हारी यादों के दीपक जगमगाते रहेंगे। तुम्हारी याद हर कदम पर रोशनी बन कर उभरेगी। मैं आगे बढ़ता जाऊंगा। आकाश गंगा की रात पर चाँद से फूटती हुई प्रकाशमयी किरणों में सूर्य की दमक और तेज में तुम्हारी मांग, तुम्हारा माथा मुझे याद आते रहेंगे।

मधु!

कई बार सोचा कि तुम्हारे अखरोटी बालों को किसी से उपमा दूं। रात से—पर वह तो काली होती है—बरसात की सुबह से!—उसमें घुटन होती है। तो क्या फूलों के रंग से—वे रंग तो उड़ जाते हैं।—महक भी गायब हो जाती है। मैंने महसूस किया कि इन बालों को मैं जो लहरों से सुशोभित हैं, उन लहरों में जो तूफान छिपे हुए हैं, उनसे जो खुशबू का सैलाब निकलता है, वह संसार की किसी भी वस्तु में नहीं है। मैं सोचता हूं कि तुम्हारे माथे को सूरज और चन्द्रमा से उपमा दूंगा, लेकिन चन्द्रमा भी डूब जाता है। सूरज भी छिप जाता है। चांद की रोशनी में मटियालापन होता है।

सूरज में तेजी होती है, गर्मी होती है। तुम्हारे माथे मे रूप, सौन्दर्य और प्रकाश की जो किरणों की आभा प्रकाशित होती है उनमें चांद की ठण्डक और सूरज का तेज है।

मैंने गुलाब को देखा। उसमें ओस की बूंदें देखीं। प्रातःकालीन क्षितिज की लालिमा देखी। दहकते हुए अंगारे देखे और मुझे लगा कि तुम्हारे गालों की दमक और उनके झिलमिलाते हुए रंग और फानूस की तरह जगमगाती लालिमा के आगे कुछ भी नहीं है।

मधु !

तुम्हारी आँखों की याद आते ही हिन्दी के विख्यात कवि रसलीन का एक दोहा याद आ जाता है—

'अमी हलाहल मद भरे श्वेत, श्याम, रतना।
जियत मरत उसके झुके परत जेहि चितवन इक बार ॥'

तुम्हारी आँखें भी जब उठती हैं तो जिलाती हुई और झुक जाती हैं तो ऐसा लगता था कि समूचा संसार पैरों पर झुक गया हो। मैं उनकी चमक के बारे में सोचता हूं तो ऐसा लगता है जैसे बिखरी हुई चाँदनी में हीरे-पन्ने चमक रहे हों।

तुम्हारी आँखें मृगनयन जैसी हैं और तुम्हारे होंठ, कंवलनाल जैसे हैं। शायद तुम्हें बनाने के बाद विधाता ने घण्टों बड़े प्यार से और बड़ी चाहत से तुम्हें देखा होगा। और फिर अपने सौन्दर्य के रंग से तुम्हारी तस्वीर को निखारा होगा। इसलिए मैं इसे अमर सौन्दर्य कहता हूं।

यह सब इसलिए लिख रहा हूं कि मैं तुम्हें इस तरह नहीं चाहता कि मैं तुम्हें पढ़ाया करता था। तुमसे एक लगाव हो गया था। मेरे प्यार में इस दुनिया का प्यार था। तुमसे ऐसा प्यार, जो प्रत्येक स्त्री-पुरुष के जीवन में आवश्यक होता है। वह प्यार जिसका प्रदर्शन शारीरिक उत्तेजना में निहित होता है।

आज उसी प्रकार के प्यार का वास्ता देकर उसी प्यार का नाम लेकर तथा उसी प्रदर्शन के लिए तुमसे एक प्रश्न कर रहा हूं।

मैंने जीवन में आशा की डोर कभी हाथ से नहीं जाने दी। हमेशा असम्भव की ओर बढ़ा और उसे सम्भव बना दिया। मुझे वे फूल अच्छे नहीं लगते, जिन तक पहुंचने में हाथों को काँटों की चुभन का आनन्द न उठाना पड़े। न वह कारवाँ अच्छा लगता है जिसे आग की नदी पार न करनी पड़े। न वह प्यार अच्छा लगता है जिसमें प्रेमी और प्रेमिका के बीच कोई विवशता, कोई बन्धन और दीवार न हो।

इसलिए मैं दीवारों को गिराकर, जंजीरों को तोड़कर, क्रूर परिस्थितियों की आग से गुजरकर, आशा की मशाल हाथ में उठाए मंजिल तक पहुंचने और भविष्य पर विश्वास करने वाला व्यक्ति हूं और अब जबकि सैशन से जितने आदमियों को मेरे साथ फँसाया गया था, विशेष रूप से तुम्हारे पिता, सब लोग छूट चुके हैं। हाई कोर्ट ने मुझ अकेले को अपराधी माना है। सुप्रीम कोर्ट ने किसी षड्यन्त्र की सम्भावना को रद्द करते हुए मुझ अकेले को नादिर खाँ की हत्या का जिम्मेदार माना है। हैवियस कार्पस नामन्जूर हो चुकी है। फाँसी का फन्दा हर बीतने वाले दिन के साथ मेरी गर्दन के पास आता जा रहा है। और मृत्यु निश्चित है।

ऐसे में भी मैं निराश नही हूं। आशा की मशाल मेरे हाथ में है। लेकिन अगर आशा का यह दीप बुझने लगे, तुम लोगों को मेरी फाँसी का समय मालूम हो जाये तो मेरी एक साध पूरी कर देना। मेरी एक आकांक्षा है—और मैं जानता हूं कि मेरी यह साध अधूरी न रहने पायेगी।



और यह इच्छा, आकांक्षा—साध है कि तुम मेरी लाश पर दुल्हिन बनकर आओ। उस समय जब सुबह का सितारा झिलमिलाते हुए, तुम अपने पति की बाँह में बांह फँसाकर आओ। उसी के सामने मेरे चेहरे पर पड़ी चादर अपनी बांह से हटाकर मेरा चेहरा देखो और अपने गले में पड़ हुए सारे फूलों के हार, अपने पति के गले की सारी फूल मालाएँ मेरी लाश पर चढ़ा दो।

इस बात की अनुमति वही दे सकता है जो मुझे जानता हो। जिसका हृदय विशाल हो—और इस भरी दुनिया में केवल रंजन भाई ही ऐसे हैं मधु। मैं उन्हें और अपने को दो नहीं समझता। इसलिए तुम रंजन भाई के साथ शादी कर लो। वह कल्पना को चाहते हैं। मेरा यह पत्र उन्हें दिखा देना। मैं जानता हूं कि वह तैयार न होंगे लेकिन मेरा प्यार उन्हें मजबूर कर देगा और वह तुमसे विवाह करने के लिए तैयार हो जायेंगे।

विदा दो मधु ! अब तुमसे स्वर्ग के द्वार पर ही भेंट होगी।

तुम्हारा—
'सुशील'

मधु के नाम पत्र लिखने के बाद उसने दूसरा पत्र रंजन के नाम लिखा। फिर दोनों पत्र जेलर को सौंप दिए।

उसके होंठों पर मुस्कराहट थी। ऐसा लगता था जैसे उसके सिर से कोई बहुत भारी बोझ उतर गया हो। (शेषपृष्ठ ३८ पर)



सिलबिल पिलपिल
पिछले अंक में आपने पढ़ा कि सिलबिल का अपनी गली की एक लड़की अंजना स रोमांस चलता है पिलपिल को इस बात का पता लगता है तो वह सोचता है कि अंजना वास्तव में उसे प्यार करती होगी और गलतफहमी में सिलबिल को घास डाल रही है। पिलपिल अंजना से मिलता है। अंजना पिलपिल को भी लिफ्ट दे देती है, पिलपिल सोचता है कि जो उसे शक था वही हुआ है। उससे आगे—
याड़ी तुझे सख्त गलती हो गयी है। अंजना असल में मुझसे प्यार करती है, वह तुझे पिलपिल समझ बैठी है।
लो और सुनो, अंजना पिलपिल से प्यार करती है। जैसे पिल-पिल नाम इतना बांका हो ?
मैं अभी उससे मिल कर आ रहा हूं। वह मुझसे बड़े प्यार से बोली।
प्यार से तो वह अपने कुत्ते से भी बोलती है, तोते को भी प्यार से पुचकारती है। मेरे पास तो उसका दिया कैलिको का रूमाल, मूंगफली का खाली लिफाफा भी है जिसे उसने हाई लव यू लिख कर दिया था।
वह गलतफहमी में यह सब कर गयी होगी। वह मुझे देख दुल्हन की तरह शर्मा गयी थी।
कमीने गंजे, अपने दोस्त की महबूबा पर बुरी नजर डालता है ? दोस्ती के नाम पर थूक दिया तूने ! दुनिया में और सारी महबूबायें क्या मर गयी थीं ? फिर कभी तूने अंजना से बात करने की कोशिश की तो तेरी खाल खिचवा कर उसमें मूंगफली के छिलके भर कर यूगांडा को रजिस्टर्ड पार्सल से भेज दूंगा। अंजना मेरी है और मेरी रहेगी। मेरी दाल भात में मूसर चन्द बनने की कोशिश न करना हां !


शैतान के बच्चे, मेरे हाथों मरने के लिये तैयार हो जा !
मैंने तुझे प्यार से समझाने की कोशिश की लेकिन तेरी खोपड़ी में बड़े-बड़े पत्थर पड़ गये हैं। अंजना का ख्याल छोड़ दे, वर्ना खून की नदियां बह जायेंगी।
मैं ही कौन-सा डरता हूं ? मैंने भी अपनी मां का दूध पिया है। देखते हैं कि किसका खून बहेगा। मुहब्बत और प्यार की लड़ाई इन्साफ की लड़ाई है, एक जलने वाला नीच विलेन मेरे प्रेम में दखल कर अपनी मौत को दावत दे रहा है। मेरे गंगाजल की तरह पवित्र जज्बात से खिलवाड़ करने की जुरंत कर रहा है।
इश्क-प्यार की जंग अब टलने वाली नहीं है।
ऐ मुहब्बत जिन्दाबाद...
जिन्दाबाद
ZINDABAD
जिन्दाबाद
प्रेम आर्केस्ट्रा
बैंड कलाकार
1. माहीवाल
2. रांझा
3. रोमियो
4. मजनूं
बैंडमास्टर गरीबचंद
नमस्ते, मैं कराची के नेशनल स्टेडियम से गरीब चन्द बोल रहा हूं ! यह कमेंट्री आप डकलप टायर ट्यूब के निर्माताओं के सौजन्य से सुन रहे हैं। दोनों प्रेम के मतवाले सेनानी पिच पर आ गये हैं। कुछ ही क्षणों में मुहब्बत की जंग शुरू होने वाली है। दोनों बैट्समैन मराठा सैनिकों की पोशाक में हैं। मिलबिल ने तलवार उसी प्रकार उठा रखी है जैसे सैंचुरी पूरी होने पर गावस्कर अपना बल्ला हवा में अभिवादन स्वीकार करने के लिये उठाता है। पिलपिल की तलवार इस समय स्क्रीन के समानान्तर उठी हुयी है। अब अम्पायर के इशारे का इन्तजार है कि खेल शुरू हो...सॉरी माफ कीजिये जंग शुरू हो ! प्यार की लड़ाई, उसी प्यार की लड़ाई जिसकी भेंट लाखों सिर चढ़ चुके हैं।
AIR
...और यह अम्पायर का इशारा !


पिट किट किट पिट
पिट
टिट पिट
माइक्रोफोन पर आप तलवारों के टकराने की किट किट की आवाज सुन रहे होंगे ! जग शुरू हो चुकी है । शुरू-शुरू में दोनों बैट्समैन बहुत सावधानी से डिफेन्सिव गेम खेल रहे हैं, यह सही तरीका भी है क्योंकि तलवारें नयी हैं उन पर ग्लॉस यानि चमक है । धीरे-धीरे बैटसमैन सैटल हो जायेंगे तो अपने शॉटस दिखायेंगे । यह पिलपिल ने अपने तलवार से सिलबिल की गर्दन के पास स्क्वेयर कट करने की कोशिश की । सिलबिल पहले से ही होशियार था उसने अपनी तलवार आगे बढ़ा कर वार को नाकाम किया, रोक लिया ! बॉल बैक टु दि बोलर……
ALL INDIA RADIO
यह ले
यह ले.
और यह बड़ा ही रोमांचक क्षण…खेल का…दोनों बैटसमैनों ने एक साथ एक ही समय में हुक लगाने के लिये तलवारें घुमायीं और एक साथ ही खच्च से दोनों के सिर धड़ से अलग होकर हवा में उछले…दोनों बैट्समैन आऊट हो गये…एक्सपर्ट कमेंटस के लिये लाला रामनाथ…यह जो शाट था दोनों का बहुत अच्छा हुक शाट था…दोनों ने टायमिंग में गलती नहीं की—तलवारों ने बायीं ओर से ठीक गर्दन को ऊंचाई तक एक आर्क बनाया । और दोनों के सिर उड़ गये । बोथ वर बोल्ड नैक एण्ड क्रो । मैं तो पहले ही कहता था कि पिच में कुछ नहीं है, वह न बालरों को मदद दे रही है न स्पीनरों को, यह बैट्स मैनों की अपनी गलती थी ।
हाय ! अंजना शादी से पहले ही विधवा हो गयी । दोनों टायर पंचर हो गये, अब उसे पैदल घर जाना पड़ेगा । मेरे दोनों सच्चे यार इस दुनिया को छोड़ कर सीधे स्वर्ग चल दिये ! मुझे किसके सहारे छोड़ गये । नहीं-नहीं अभी खेल खत्म नहीं हुआ ।
कहते हैं कि फौरन ही कटा सिर दोबारा गर्दन पर रखा जाये तो वह जुड़ जाता है । देखता हूं, यह जुड़ तो गया अरे… यह तो सचमुच इसकी आखें भी झपकने लगी हैं । बोल सियापति रामचन्द्र की जै !
कमाल है ।
यह तो तरकीब ठीक काम कर गयी अब पिलपिल भी जी उठेगा । बोल मियां मिट्ठू ।
तू कौन ?
बतलायेगा ?
जमूरे, यह दीवाना पढ़ने वाला नर है या मादा ?
राम-राम
मैं जमूरा ।
बतलायेगा ।
दोनों हैं । दिल इसका दीवाना है और बातें दीवानी ।


इनके सिर नये-नये जुड़े हुए हैं इसलिये थोड़ी देर इनको परेड और व्यायाम कराना पड़ेगा ताकि खून इनके सिर तक चढ़ जाये ।
लेफ्ट-राइट, लेफ्ट-राइट, लेफ्ट-राइट, क्विक मार्च··· एबाऊट टर्न—
अरे यह क्या गजब हो गया मुझसे ! मैंने जल्दी में गौर ही नहीं किया वह तो अब मेरी नजर इनके कपड़ों पर पड़ी तो ध्यान आया ! मैंने इनके सिर गलत फिट कर दिये ! पिलपिल वाले धड़ पर सिलबिल का सिर लगा दिया और सिलबिल वाले धड़ पर पिलपिल का सिर लगा दिया । अब क्या होगा ?
ऐह, इसका मतलब सिर मेरा पिलपिल का अपना है लेकिन धड़ सिलबिल के सिर के नीचे रखा है । इसका क्या मतलब ? प्यार दिल करता है और दिल छाती के अन्दर होता है···हैं ?···
दिल छाती के अन्दर होता है । बिल्कुल सही है और प्यार भी दिल करता है । मतलब यह हुआ कि मैं सिलबिल अंजना से प्यार करता था लेकिन मेरे दिल वाला धड़ पिलपिल के सिर के नीचे है इसलिये वही अंजना के प्यार का सच्चा हकदार है क्योंकि इस वक्त मैं जो हूं वह तो सिर ही सिर है दिल तो पिलपिल का है इसमें इसलिये··
इसलिये क्या ?
अंजना तेरी है और तेरी ही रहेगी ।
लफंगे, अंजना तेरी है और तेरी ही रहेगी कोई तुमको अलग नहीं कर सकता ।
मैं भी समझता हूं अंजना तेरी है तेरे धड़ में मेरा दिल है इसलिये वह तेरी हुयी तो मेरी हुयी समझो ! अंजना तेरी है तेरी ।
तेरी है तेरी ।
सुनो, सुनो, सुनो भाइयों, अंजना न मेरी है न थमारी ! अंजना माइकेल की है । वह जो लम्बे बालों वाला एंग्लो इण्डियन लड़का इस गली में घूमता था अंजना ने उससे कोर्ट में शादी कर ली । थम दोनों आपस में लड़ते रह गये और वह माल उड़ा ले गया । दो बिल्लियां लड़ती रहीं और बन्दर रोटी खा गया ।

आपके पत्र

मुझे आपकी पत्रिका का अंक ४३ प्राप्त हुआ। इसमें सभी प्रकाशित कहानियां एवं चटपटा सिलबिल-पिलपील बड़ा ही मजेदार लगा। मेरे ख्याल से इसमें अगर आप फिल्म के हीरो की जगह क्रिकेट के खिलाड़ियों का चित्र प्रकाशित करें तो 'सोने में सुहागा' जैसी बात होगी।

शिव मोहन सर्राफ—वाराणसी

दीवाना का अंक ४३ मिला, मुख पृष्ठ देख कर ही मैं २ फुट ऊपर उचक गया और चिल्ली लीला, परोपकारी, बन्द करो बकवास, सिलबिल-पिलबिल, मोटूपतलू, पंचतंत्र पढ़कर मैं बहुत खुश हुआ।

शिवनलाल लत्री, राकेशकुमार लत्री—रायपुर

'दीवाना' अंक ४३ पढ़ने को मिला, अन्य अंकों की तरह यह अंक भी बहुत ही रोचक एवं ज्ञान बर्द्धक लगा। परन्तु बच्चा झमुरा स्तंभ न देखकर थोड़ा खला फिर भी इस अंक में चिल्ली लीला, परोपकारी, काका के कारतूस पसंद आये, मेरा आपसे अनुरोध है कि चाचा चौधरीं और अर्थ-अनर्थ स्तंभ पुनः शुरू करें। समय २ पर पहेलियां भी अवश्य प्रकाशित करें।

बलराम फत्यानी 'प्रेम'—बस्तर

'दीवाना' का अंक नं० १ पाया, यह मन को बहुत हर्षाया। इस अंक ने घर में धूम मचाई, 'टिल्लू-'बिल्लू' में फिर हुई लड़ाई। पापा ने दी डांट पिलाई, 'सुबह का तारा' कहानी मन ही मन गुद गुदाई, अतः धन्यवाद 'स्वीकार करो भाई।

मोहन प्रकाश अग्रवाल—ग्वालियर



नव वर्ष की शुभ कामनाओं सहित दीवाना के अंक नं० १ व २ मिले। पहले अंक को जब मैं पढ़ रहा था तो उस वक्त मुझे लगा जैसे कोई कॉमेडी पिक्चर देख रहा हूं! और दूसरे अंक को पढ़ते वक्त लगा जैसे मैं कोई नाटक देख रहा हूं। कहने का मतलब कि दो रुपये में मुझे फिल्म और नाटक दोनों का आनन्द प्राप्त हुआ।

गनेश मित्तल हलवाई—गाजियाबाद

दीवाना का नया अंक नं० १ पढ़ा। बहुत पसन्द आया। इस बार भी प्रत्येक दीवाने कलाकार ने अपनी दीवानगी से हंसाया। टिकी टिकी बूम-बूम का पिलपिल-सिलबिल पर आतंक हमारे लेखक ने बड़ी सूझ-बुझ के साथ लिखा। लेखक को धन्यवाद। आशा है ऐसी ही हास्यप्रद चित्र कथाओं से हमारा मनोरंजन करेंगे। आपका नूतन वर्ष का अंक तो मिला लेकिन उसमें 'दीवाना कलंडर नहीं देखा तो निराशा हुई। 'देखता' फिल्म पैरोडी पसन्द आई! आपको व लाखों पाठकों को मेरी ओर से नूतन वर्ष की शुभ कामनाएं...!

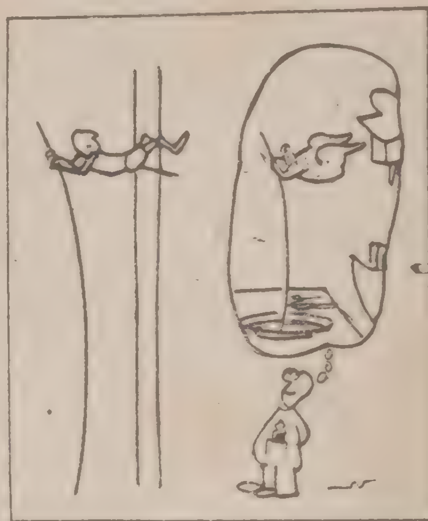
दिनेश भटाई 'राजा'—इन्दौर

'इस बार जब पोस्टमैन ने आकर 'दीवाना' पकड़ाया तो दिल बल्लियां उछलने लगा, ऊपर से चिल्ली के मछली पकड़ने के स्टाइल को देखकर ऐसा लगा जैसे चिल्ली ने पहली बार अक्ल से काम लिया हो। हमेशा की तरह इस बार भी 'दीवाना' में सिलबिल पिलपिल, मोटू-पतलू, आपम की बातें, मदहोश (खास कर) और काका के कारतूसों ने हंसा हंसा कर घायल कर दिया। 'दीवाना' दिन पर दिन तरक्की करता रहे यही मेरी दुआ है।

सुरेन्द्र सिंह 'बबलू—मनीपुर

दीवाना का नया अंक आधा मील जाकर भी बुक स्टाल से प्राप्त किया। इस अंक में चिल्ली लीला ने बहुत हंसाया। मुखपृष्ठ भी मजेदार रहा 'सुबह का तारा' भाग ६ रोचक रहा। लेखिका को मेरी तरफ से बधाई। दीवाना का हर अंक हास्य-व्यंग्य से भरपूर होता है। दीवाना मैं कई वर्षों से पढ़ता आ रहा हूं। इस अंक में सिलबिल के साथ मकड़े की लड़ाई भी काफी रोचक रही, कृपया यह चित्र कथा रंगीन दिया करें। मोटू पतलू भी अच्छे रहे। कुल मिलाकर पूरा अंक मजेदार रहा।

अजीत सिंह—शिमला



दीवाना का नये वर्ष का अंक २ मिला। मुख पृष्ठ पर चिल्ली की समाज सेवा देखी। इस बार सिलबिल का हाल देखकर समझ में नहीं आया कि हँसूं या रोऊं। मोटू-पतलू 'दीवाना' में चार चांद लगा देता है। या यूं कह लिया जाये कि मोटू-पतलू के बिना 'दीवाना' अधूरा है। भारत के दीवाने खेल, चिल्ली लीला, फैन्टम, क्यों और कैसे, सुबह का तारा भाग ६, मदहोश और सवाल यह है कि अच्छा लगा।

अमीत अग्रवाल—देवली

दीवाना का अंक १ मिला, मुख पृष्ठ काफी सुन्दर रहा। मोटू-पतलू सिलबिल-पिलपिल, सवाल यह है, परोपकारी, सुबह का तारा का भाग ५ काफी अच्छे रहे। कहानी चतुर लड़का भी अच्छी रही बाकी सारे फीचर मजेदार रहे। उम्मीद है अगला अंक भी मनोरंजन से भरपूर होगा।

मुहम्मद जावेद करीदी—बिसारी

जूडो मास्टर

घसीटा राम

बाकी किसी बात में शक हो, पर इस बात में कोई शक नहीं कि घसीटाराम को भगवान ने फुर्सत में बनाया है । अक्ल के हिसाब से घसीटाराम की एक रग फालतू है और उन्हें मित्र मिला है छछून्दर भाई जैसा, जिसके पास अक्ल नाम की कोई चीज नहीं । यह तो आपको मालूम ही है कि दुनिया का कोई काम ऐसा नहीं जिसमें घसीटाराम को बीस साल का तजुर्बा न हो । ले देकर जूडो और कराटे की कसर रह गई थी वह अब पूरी हो गई है । इनका यह तजुर्बा किस-किसको ले डूबेगा यह आगे देखिए और डूबने वालों की जान को दुआयें दीजिये ।






ठीक कह रहा था तू । कचूमर निकला है ना ?
हाँ निकला है ।
तो फिर पूरा जूडो मास्टर बन गया तू भी ।
अब हम किसी की भी खाट खड़ी कर सकते हैं जूडो मास्टर ।
और अपना खटोला जहाँ चाहे बिछा सकते हैं
चलो नारा लगा दो हाथ उठा कर ।
जो हम से टकरायेगा···
चूर-चूर हो जायेगा ।
वहीं दो अजीब
से आदमी इन जूडो
मास्टरों को देखकर चौंक गये थे ।
यह कौन हैं ? हमें देख लिया है क्या इन लोगों ने ?
इसका मतलब है इन लोगों ने गड्ढा खोदने से लेकर दबाने तक की
पूरी कार्यवाही देखी है । इन्हें ठिकाने लगा दो गर्दन मरोड़ कर ।
क्यों बे झींगरो, यहाँ क्या कर रहे हो ?
याद नहीं रहा हम क्या कर रहे थे । पर तुम्हें देखकर लगता
है हम अपनी कबर खोद रहे थे ।
यह काम तो हम कर देंगे । तुम ने हमारा राज जान लिया
है । जानते हो इसकी सजा क्या है···?
मौत


इतनी छोटी-सी सजा है । मौत ! क्या इससे बड़ी सजा नहीं है तुम्हारे पास ।
तुम जूडो के उस्ताद लगते हो । मुझ से बाजी ले गये तो जान छूट जायेगी । आओ जूडो के हाथ दिखाओ ।
मैं तो हाथ दिखा दूंगा । पर इसकी क्या गारन्टी है कि तुम जूडो के पांव नहीं दिखाओगे ।
बकवास बन्द करो और जूडो के लिए तैयार हो जाओ ।
जूडो से तो तुम्हारी पहले वाली सजा ठीक है ।
मौत ?
हाँ मौत ।
तभी वहां चेला राम भी आ गया ।
क्या बात है ? किस बात का झगड़ा है ? इन बेचारों से क्यों उलझ रहे हो ?
हाँ, इससे उलझो ।
मैं इन्हें जूडो के हाथ दिखाने को कह रहा हूं ।
इसे दिखाओ अपने जूडो के हाथ । इसकी खाल बहुत मोटी है और हड्डियां बहुत मजबूत हैं ।
क्या मुसीबत है, मैं तुम्हें बचवा रहा हू और तुम मुझे ही मरवा रहे हो ।
इससे क्यों लड़ें जूडो की लड़ाई ? राज तो हमारा तुम जानते हो ।
वह राज हम इसे भी बता देंगे ।
इसे भी बता दोगे ?



इसे भी बता दोगे ! इसका मतलब है यह भी हमारा राज जान जायेगा । तो फिर पहले इसी बेंगन का भुर्ता बना दो ।
राज जान जाऊंगा ! कौन सा राज जान जाऊंगा ?
यह तो हमें भी नहीं पता ! जो इसने कहा, वह हमने कह दिया ।
चींईंईंईंईं...
आह...! मार दिया ।
तभी ऊपर हवा में एक जबरदस्त चीख सुनाई दी । सब ने ऊपर गर्दन उठा कर देखा, तो वहां उड़ने वाली एक बहुत बड़ी मछली मुंह फाड़े हमला करने को तैयार थी ।
चीं---...


उड़न मछली का पहला निशाना उस झगड़ालू आदमी की ओर था। तभी चेलाराम ने उछल कर उस पर हमला कर दिया।
चोट खा कर उड़न मछली पलटी और अब सीधी चेलाराम पर टूट पड़ी।
चीं
चेलाराम ने एक जबरदस्त छलांग लगाई।
और दूसरे ही पल अब वह उड़न मछली के ऊपर था।
ची---



मुझे वह बेलचा दो लपक कर ।
चीं चीं चीं
यह लो ।
आ गया पकड़ में ! यह तुम पर हमला करे तो उछल कर अपने को बचा लेना ।
ची
लगता है यह उड़ने वाली शार्क किसी दूसरे उपग्रह से आई है । हमारी दुनिया में तो होती नहीं ।
इस दाँतों वाले ने इसका काम तमाम न किया तो यह हमें दूसरी दुनिया में पहुंचा देगी ।
?
तभी चेलाराम ने नीचे झुक कर मछली के पेट में बेलचा मारा और वह उसकी खाल को चीरता हुआ अन्दर घुस गया ।
ची...



मछली ने एक जोरदार चीख मारी और वह हवा में तड़पने लगी। नीचे खड़े यह दृश्य देखने वाले डर के मारे थर-थर कांप रहे थे।
चीं---
घायल मछली ने तड़पते हुए कुछ देर हवा में चक्कर काटे और जब निढाल होकर गिरी तो सीधी उन लड़ाकू आदमियों पर आ पड़ी।
अरे मैं मर गया।
मेरी हड्डियों का चूरा हो गया।
चेलाराम ने सहारा देकर मछली के नीचे दबे आदमियों को निकाला।
देखना कहीं चोट तो नहीं लगी तुम्हारे ?
तुमने जान बचा दी। भगवान तुम्हारा भला करे।
कितनी खतरनाक मछली थी, प्राचीन कहानियों में तो इसका जिक्र पढ़ा था। असलियत में आज पाला पड़ा है।

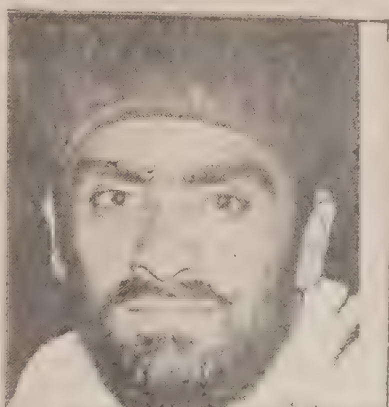


तुमने हमारी जान बचाई । मैं किस मुंह से तुम्हारा शुक्रिया श्रदा करूं ?
इसी मुंह से कर दो । यह इतना बुरा नहीं है ।
हां, तो हमने कहां से बात छोड़ी थी ? मैं तुम्हें जूडो के हाथ दिखा रहा था ।
तो फिर हो जाग्रो ग्रब तैयार, मैं हमला कर रहा हूं ।
क्या मतलब है ? ग्रभी-ग्रभी मैंने तुम्हारी जान बचाई है ग्रौर तुम मुझे मारोगे ।
जान बचाने के लिये मैंने धन्यवाद तो कह दिया । जूडो का हिसाब चुकाना दूसरी बात है, जानते हो हमारा राज जानने का मतलब क्या है ?
पर यह कह रहा है वह राज यह तुम्हें बता देगा ।
वह राज तो यह जानता है ।
हमले के लिए तैयार हो जाग्रो । रेडी, वन...टू...
थ्री....!
कौन-सा राज है वह ? अब तो बता दो....!
मुझे खुद नहीं पता ।

खेल खेल में

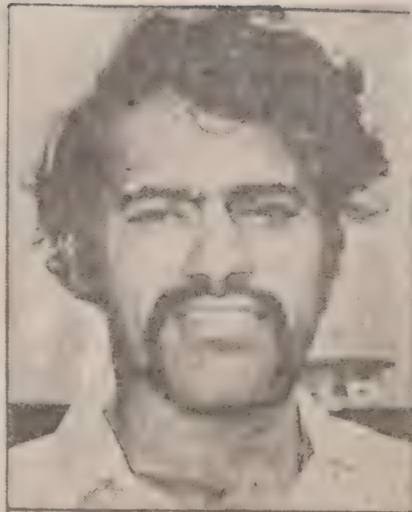
भारत की स्पिन तिकड़ी का टैस्ट विकेट को अलविदा

आज से दो-तीन वर्ष पहले तक यह कल्पना करना भी संभव नहीं था भारत की टैस्ट टीम तिकड़ी के बिना खेल के मैदान में उतरेगी लेकिन आज अब वह वक्त आ गया है। जैसे कि खेल का नियम है कि एक समय आता है जब हर खिलाड़ी की आयु बढ़ने के साथ-साथ उसका खेल एक ऐसे दर्रे पर आ जाता है जहां खेल में पैनापन नहीं रहता। हमारी विश्व विख्यात तिकड़ी भी उसी अवस्था में पहुंच चुकी थी। भारतीय क्रिकेट में नये खिलाड़ियों और नये खून का समावेश बहुत जरूरी था। स्पिन चौकड़ी में से केवल वेंकट ही अब टीम में रह गये हैं। भारत के हर क्रिकेट प्रेमी का दिल इन तीन महान स्पिनरों को टैस्ट मैदान से विदा होते देख अवश्य ही भारी होगा परन्तु हमें तर्क से काम लेना होगा, हमारी नजर भविष्य पर होनी चाहिए जो कि निश्चित ही युवा खिलाड़ियों के कंधे पर ही हो सकता है। अब यह स्पिन तिकड़ी हमारे लिए एक इतिहास बनकर रह जायेगी। एक सुखद याद बनकर हमेशा खेल प्रेमियों का दिल गुदगुदाता रहेगी। भारतीय क्रिकेट को विश्व में चर्चा का विषय बनाने में इन तीनों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। आश्चर्य में डालने वाली बात यह है कि इन चार स्पिनरों ने १३-१४ वर्ष के अपने समय में टोटल आठ सौ के निकट विकेटें भारत के लिये लीं। काफी समय तक क्रिकेट प्रेमी टैस्ट मैदान में इनकी अनुपस्थिति अनुभव करते रहेंगे। वह दिन याद आयेंगे जब तीन चार ओवरों के बाद ही स्पिनर आक्रमण शुरू कर देते थे। बेदी का सिर पर पटका बांधकर आना कमेंटेटरों का उस पटके पर अपनी टिप्पणियां देना, बेदी का बार-बार फील्ड सैट करना और कमर पर हाथ रखकर अम्पायर की तरफ देखना! चन्द्रशेखर के बॉलिंग के लिए आते ही स्टेडियम में तालियों की गड़गड़ाहट, चन्द्रशेखर का बॉल को हाथ में लेकर एक हाथ से दूसरे हाथ में लड्डू बनाना और जोर से एल. बी. डब्ल्यू. की अपील करना। प्रसन्ना का थर्डमैन से बॉलिंग के लिए आना और धनुषाकार में आती सीधी साधी ऑफ स्पिनर सी लगती गेंद का बैटसमैन के बैट को चकमा देते हुए निकल जाना। ये सारी यादें जब-जब टैस्ट मैच होंगे लौट आयेंगी। दर्शक बेदी को तो भूल ही नहीं पायेंगे क्योंकि बेदी का दर्शकों से विशेष नाता था। वे प्रायः दर्शकों के मनोरंजन के लिए कुछ न कुछ करते ही रहते थे। चन्द्रशेखर का स्वर्गीय गायक मुकेश के गानों से लगाव तो सर्व विदित है ही। इन तीनों के बल पर ही भारत कई टैस्ट शृंखलायें विजित प्राप्त कर पाया।



बेदी पॉजी के नाम से खिलाड़ियों द्वारा प्रेम से पुकारे जाते थे। भारत की ओर से सर्वाधिक विकेटें लीं। उन्होंने २५० से अधिक विकेटें ली हैं। भारत की कप्तानी छः शृंखलाओं में की। बिना लागलपेट के बात कहना बेदी की आदत रही है। इसी कारण बेदी की कई बार अधिकारियों से झड़प हुई। इंग्लैंड काऊंटी मैचों में बेदी नारथेम्पटन शायर के लिए खेलते रहे, वहां से उन्हें तीवर ग्लीसरीन कांड के कारण निकाला गया। अभी वे कई वर्ष और रणजी आदि प्रथम श्रेणी खेलों में खेलेंगे ऐसी पूरी आशा है।

चन्द्रशेखर विकेट इतिहास में एक अजूबे बॉलर हुए हैं। बेदी के अतिरिक्त वही एकमात्र भारतीय बॉलर हैं जिन्हें २०० से अधिक विकेटें लेने का श्रेय प्राप्त है। विश्व



भर के बैटसमैनों के लिए चन्द्रशेखर एक पहेली बने रहे! पोलियो ग्रस्त उनके हाथ ने क्रिकेट जगत में जो तहलका मचाया वह तो सब ही जानते हैं। चन्द्रशेखर कर्नाटक की ओर से खेलते हैं और अभी कई वर्ष और प्रथम श्रेणी मैचों में खेलते रहेंगे।



प्रसन्ना को विश्व के श्रेष्ठतम ऑफ स्पिनरों में माना जाता है। कई विश्व प्रसिद्ध बल्लेबाज इस दावे की पुष्टि करते हैं। प्रसन्ना कई बार टैस्टों से हटे, फिर आये। यह लुका-छिपी बहुत विवाद का विषय बनी रही। दूसरे ऑफ स्पिनर वेंकट के साथ उनका धूप-छांव का खेल वर्षों चलता रहा है। व्यक्तिगत जीवन में वेंकट प्रसन्ना के मित्र हैं। दोनों पेशे से इन्जीनियर हैं। प्रसन्ना भी कर्नाटक के लिए खेलते हैं वहां की टीम के कप्तान भी हैं। हाल की आस्ट्रेलिया तथा पाकिस्तान सीरीज उनके लिए अच्छी नहीं रही। उन्होंने टैस्टों में १८० से अधिक विकेटें ली हैं। ●

हाकी कैसे खेलें

कप्तान को यह काम ऐसे खिलाड़ी को सौंपना चाहिए, जिसका आत्मविश्वास मजबूत हो और जो पक्के इरादे से खेलता हुआ अच्छे से अच्छा नतीजा प्राप्त कर सके। जहां तक सम्भव हो, गेंद गोल के कोने में गोलकीपर की बायीं ओर रखी जानी चाहिए, क्योंकि बहुधा यह स्थान अपेक्षाकृत कम रक्षित रहता है, परन्तु यदि यह स्थान सुरक्षित हो तो अन्य उपाय अपनाना चाहिए।

पैनल्टी-स्ट्रोक, गोल करने का सबसे सुगम तरीका है। इसलिये यह महत्वपूर्ण है। इसमें सफलता प्राप्ति के लिए खूब अभ्यास किया जाना चाहिए। गोल के जाल के ऊपरी कोने अधिकांश गोलकीपरों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। जाल के दायें अथवा बायें कमर की ऊंचाई तक गोल किये जाने की सम्भावना बहुत ही कम होती है।

पैनल्टी-स्ट्रोक से बचाव करते समय गोल कीपर को गोल-रेखा पर खड़ा होना आवश्यक है। उसे स्ट्रोक रोकते समय अपने पैर जरा भी हिलाने अथवा खिसकाने नहीं चाहियें। उसके पूरक खिलाड़ी को बिना अपना साज-सामान बदले, गोल की रक्षा करनी पड़ेगी।

स्ट्रोक लेने वाले खिलाड़ी, अम्पायर से संकेत मिलने पर एक कदम आगे बढ़कर गोल-रेखा के केन्द्र के आठ गज सामने से कोई-सा भी स्ट्रोक लगा सकता है (हिट के अतिरिक्त)।

गेंद हिलने से पहले यदि पिछला पैर अगले पैर से आगे नहीं जाता तो 'स्टैप' को अमान्य नहीं किया जाएगा। पिछला पैर घसीटने या उठाने से नियम का उल्लंघन नहीं माना जाएगा।

यदि गोलकीपर गेंद को पकड़कर रोक ले तो स्ट्रोक को पूरा माना जाएगा, पर उस दशा में जब कि गेंद स्तम्भों के बीच गोल-रेखा के पार न हो चुकी हो।

गोल कीपर को चाहिए कि वह गोल की तरफ आती हुई गेंद को रोकने के लिए स्टिक को अपने कन्धों से ऊपर न उठाए। इस अवसर पर गोल कीपर तथा स्ट्रोक मारने वाले खिलाड़ी को छोड़कर शेष सभी खिलाड़ियों को निकट वाली २५ गज की रेखा के परे खड़े होना चाहिए।

अच्छा स्वास्थ्य, चुस्त खेल

हाकी के खेल में निपुणता प्राप्ति के लिए उत्तम शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक गुण होना आवश्यक है। शारीरिक रूप से स्वस्थ खिलाड़ी न केवल खेल का ही आनन्द लेता है, बल्कि वह खेल की समाप्ति तक उन सभी तकनीकों का पूरा प्रयोग करता है, जिनमें उसने अभ्यास में अथक परिश्रम करके निपुणता प्राप्त की है। इसी प्रकार मानसिक रूप से उसमें आत्म-विश्वास, धैर्य, साहस उत्साह और तीव्र बुद्धि-कौशल का होना आवश्यक है। सही पूर्वानुमान, सतर्कता, समयानुसार सही निर्णय, तीक्ष्ण दृष्टि, तीव्र क्रियाशीलता, तत्पर बुद्धि और अनुशासन-प्रियता कुशल खिलाड़ी के विशिष्ट गुण हैं। तात्पर्य यह कि अच्छे खिलाड़ी में शारीरिक स्वस्थता और सूझ-बूझ दोनों का होना बहुत आवश्यक है। यदि उसमें इनमें से एक की भी कमी है तो वह अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। हाकी खेलने के लिए खिलाड़ी में इतनी शारीरिक क्षमता होनी चाहिए कि वह लगातार कम से कम तीन घण्टे दौड़ सके। साथ ही उसे गेंद के साथ या बिना गेंद के एकदम पूरी गति से दौड़ने की कला में भी निपुणता प्राप्त कर लेनी चाहिए। सही और उचित शारीरिक तथा मानसिक स्थिति में रहकर ही खिलाड़ी बहुत अच्छा खेल सकता है।

शारीरिक शक्ति के साथ एक और आवश्यक बात है—नियमित जीवनचर्या। ठीक समय पर खाना, समय पर सोना, निर्धारित समय पर उठना और व्यायाम करना—इस सबका भी खेल और खिलाड़ी से घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह आवश्यक है कि खिलाड़ी पौष्टिक भोजन करे, परन्तु बहुत अधिक नहीं यह आवश्यक है कि जो कुछ खाया जाता है, वह समय पर और नियमानुसार हो।

इस सबका तात्पर्य यह है कि हाकी खेलने के लिए खिलाड़ी में शारीरिक क्षमता, दम-शक्ति और दृढ़ता होनी चाहिए। शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिए कुछ कसरतें आवश्यक हैं। यदि खिलाड़ी नियमित रूप से प्रतिदिन शारीरिक व्यायाम करे, तो उनकी शक्ति तो बढ़ेगी ही, साथ ही शरीर में एक लचक भी उत्पन्न होगी, जो हाकी जैसे खेल के लिए बहुत आवश्यक है।

यहां कुछ व्यायाम बताए जाते हैं, जो खिलाड़ी के शरीर को पुष्ट और उसकी मांसपेशियों में लचक उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

प्रातः काल प्रतिदिन तेज दौड़ना—हाथ-पैर ढीले छोड़ कर जितना सरलता से दौड़ा जा सके, दौड़ें। अधिक तेज दौड़ना आवश्यक नहीं है। गति को धीरे-धीरे ही बढ़ाना चाहिए। इससे पैरों की मांसपेशियां सुदृढ़ होती हैं, दौड़ने की शक्ति और दम-शक्ति बढ़ती है। गति बढ़ाने से हाकी के मैदान में गेंद लेकर या उसे नियंत्रण में लेने के लिए तेजी से दौड़ने का अभ्यास बहुत सहायक होता है।

शरीर में लोच तथा लचक उत्पन्न करने के लिए निम्नलिखित व्यायाम किये जा सकते हैं।

(१) एक ही स्थान पर खड़े होकर दोनों पैरों को घुटने से ऊंचा उठाना। यदि दौड़ने के लिए कोई खुला स्थान न हो, तो यह व्यायाम उसकी कमी भी दूर करता है। इससे शरीर में चुस्ती और स्फूर्ति का संचार होता है।

(२) पैर को डेढ़-दो फुट खुले रखकर, दोनों हाथ ऊपर रख के, शरीर के कमर तक के भाग को झुकाना और इस प्रकार उसे चारों ओर घुमाना।

(३) घुटने सीधे रखकर दोनों हाथों को पैरों के सामने सांस छोड़ते हुए धरती से स्पर्श करना। इससे भी शरीर में लोच आती है।

(४) दोनों हाथों से दोनों पैरों के अंगूठे पकड़कर बतख की तरह चलना। इससे पैरों, टांगों और जांघो को बल मिलता है।

(५) सीधे खड़े रह कर बारी-बारी दोनों पैरों को टखनों पर से धीरे-धीरे आगे मोड़ने से टखनों के जोड़ पुष्ट होते हैं।

क्रमशः

क्यों और कैसे

प्र० : व्हेल मछली को स्तनपायी क्यों कहा जाता है, इसमें तथा अन्य मछलियों में क्या अन्तर है ?

उ० : पानी में रहने के कारण व्हेल का शरीर मछली जैसा होता है । वास्तव में व्हेल पृथ्वी पर रहने वाले स्तनपायी पशुग्रों की पानी में रहने वाली स्तनपायी वंशज है । लाखों वर्षों से पानी में रहने के कारण व्हेल के बाह्य शरीर की बनावट मछली जैसी बन गई है । परन्तु भीतर से व्हेल का शरीर पृथ्वी के स्तनपायी पशुग्रों के समान ही है तथा वो ग्रपना जीवन भी उनके समान ही व्यतीत करती है । उदाहरण के लिये व्हेल के मछलो के समान मीनपक्ष हैं परन्तु उनमें हाथ की पांच उंगलियों के समान हड्डियां पाई जाती हैं । कुछ व्हेल मछलियों के शरीर के पीछे के भाग के मांस में पैरों की हड्डियां भी मिलती हैं ।

व्हेल तथा दूसरी मछलियों का सबसे बड़ा ग्रन्तर है, व्हेल मछलियों के समान ग्रण्डे न देकर नन्हे शिशु को जन्म देती है । तथा इस बच्चे का पालन भी वो पृथ्वी के पशुग्रों के समान ग्रपना दूध पिला कर करती है । जन्म के बाद ये बच्चे ग्रपनी माँ के साथ रहते हैं जो इनका हर खतरे से पूरा ध्यान रखती है ।

पृथ्वी पर रहने वाले पशुग्रों का रक्त उनके शरीर पर होने वाले बालों से गर्म रहता है । परन्तु ठण्डे पानी में रहने वाली व्हेल बालों के ग्रभाव में ग्रपने शरीर के रक्त



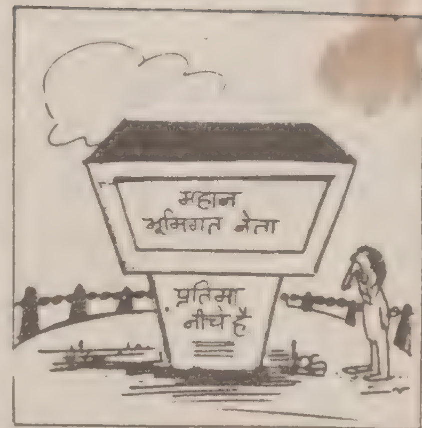
को गर्म न रख पाती । इसलिए इसके शरीर में त्वचा के नीचे ब्लैबर होना है, ये ब्लैबर त्वचा के नीचे टिशू की एक तेल भरी तह होती है, जो कि व्हेल के शरीर को शरीर पर पाये जाने वाले बालों के समान ही गर्म रखती है ।

व्हेल का सांस लेने का ढंग भी मछलियों से भिन्न है । इनके शरीर में गलफाड़ों की जगह फेफड़े होते हैं तथा सांस ये ग्रपने सिर पर बने दो नाक के छेदों से लेती है । पानी में जाने पर नाक के ये छेद वैल्व से बन्द हो जाते हैं ग्रौर इनमें पानी नहीं घुस पाता । हर पांच या दस मिनट के बाद व्हेल साँस लेने पानी की सतह पर ग्राती है । पहले व्हेल इस्तेमाल की हुई हवा को फेफड़ों से जोर की ग्रावाज के साथ बाहर फेंकती है, इसी से व्हेल मछली की तस्वीरों में देखा जाने वाला फुहारा छुटता है । फिर ताजी हवा ग्रन्दर लेकर पानी में तैरने के लिये घुस जाती है । व्हेल का ठिकाना पता लगाने में शिकारी इस फुहारे से बहुत सहायता लेते हैं ।

प्र० : डाक टिकट इकट्ठे करने का शौक क्यों और कब से आरम्भ हुआ ?

उ० : डाक टिकट इकट्ठे करना या टिकट संकलन संसार के करोड़ों लोगों का एक शौक है । ये शौक संसार में लगभग सौ वर्ष से चलता ग्रा रहा है । ग्रौर ग्रब तो टिकट संग्रह करने वालों की सहायता के लिए डाकघरों में विशेष केन्द्र भी खोल दिये गये हैं ।

ये सच है कि बहुत से लोगों ने इस शौक को केवल धन कमाने के लिये ही ग्रपनाया है । परन्तु डाक टिकट संग्रह कर धन कमाने के लिये बहुत ग्रधिक जानकारी होनी चाहिये । वास्तव में बहुत से टिकट संग्रह करके बेचने वाले इस धन्धे से कुछ भी लाभ नहीं उठा पाते क्योंकि उन्हें इसके बारे में काफी गलत फहमियां होती हैं। उनके विचार मे टिकट जितना पुराना होता जाएगा उतना ही कीमती होता जायेगा तथा कभी-कभी किसी ग्रजीब टिकट को देख कर भी वे ग्रनुमान लगा लेते हैं कि ये कम मिलता है इसलिए कीमती होना चाहिये । वास्तव में



बहुत कम उपलब्ध टिकट कीमती होते हैं परन्तु केवल पुराना होने से ही टिकट का मूल्य नहीं बढ़ जाता ।

इस प्रकार के एक बहुत मूल्यवान टिकट केप ट्राई ऐंगल का किस्सा ध्यान देने योग्य है । सन् १८६१ में दक्षिणी ग्रफ्रीका के डाक घर को पता चला कि उनके डाक घर के टिकट समाप्त हो गये हैं तथा नई सप्लाई ग्राने की ग्रभी कोई उम्मीद नहीं है, इसलिये उन्होंने एक स्थानीय फर्म से कुछ टिकट छपवाये ताकि सप्लाई ग्राने तक काम चलाया जा सके । लेकिन इन टिकटों की छपाई में एक भूल हो गई ग्रौर इस भूल की वजह से एक पैनी लाल के बजाये नीले टिकट तथा चार पैनी के नीले के बजाये लाल टिकट छप गये, जब इस घटना का पता चला तो ये टिकट बहुत ही कम पाये जाने लगे थे ग्रौर इसीलिये इनका मूल्य भी बढ़ गया ।

केप ट्राई ऐंगल टिकट तो छपवाई की भूल के कारण इतने कम बने ग्रौर इसलिये इतने कम मिलते हैं। परन्तु कभी-कभी मनुष्य स्वयं भी ऐसी कमी पैदा कर लेते हैं । जैसे सन् १८७० में एक टिकट संग्रहण विक्रेता ने बहुत सी विशेष किस्मों के ढेरों टिकट खरीद कर नष्ट कर दिये । ग्राज ये विशेष प्रकार के टिकट उस काल के ग्रौर टिकटों की तुलना में ग्राधे या चौथाई ही मिलते हैं तथा इस ही कारण मूल्यवान हैं ।

क्यों ग्रौर कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

दीवाना चक्कर

अमीरी-गरीबी का

गरीब की सब तरफ मिट्टी खराब है। अमीर के लिए सब ठीक है, काला भी सफेद है। यह दुनिया ही ऐसी है। अमीरों और गरीबों को अलग-अलग नजर से देखती है। एक काम अमीर करे तो वह प्रशंसा की चीज होती है। वही गरीब करे तो लानत मलानत की चीज। दुनिया का सोचने कहने का ढग कितना पक्षपात पूर्ण है, जरा इस फीचर में उसकी झलकियां देखिये—




गरीब को दौरा पड़ जाये तो···
पिछले जन्म के पाप फूट रहे हैं।
अमीर को दौरा पड़ जाये तो···
ब्लड कोलेस्टोरोल हाई हो गया है।
गरीब खाना बनाने के लिये चूल्हा जलाये तो···
धुयें से पड़ोसियों का जीना मुश्किल कर दिया है।
अमीरों की फैक्टरियों की चिमनिया रात दिन धुआं उगलती हैं तो···
वायु प्रदूषण की समस्या है जी यह। सरकार को और साइंटिस्टों को इसका हल ढूंढ़ना चाहिये।
गरीब का लड़का पड़ोसी की खिड़की का शीशा तोड़ दे तो···
लुच्चा, बदमाश! मां-बाप ने यही सिखाया।
अमीर का लड़का पड़ोसी का शीशा तोड़े तो···
बड़ा एक्टिव लड़का है। चुप नहीं बैठ सकता।
गरीब को साइकिल किसी से टकरा जाये तो···
क्यों बे अंधा है? दिखाई नहीं देता सामने कुछ?
अमीर की गाड़ी उसी गरीब साइकिल वाले से टकरा जाये तो···
क्यों बे बहरा है? हार्न सुनाई नहीं पड़ता?


गरीब जुआ खेले और हारे तो···
मटका
घर बार जुये में फूंकने पर तुला है।
अमीर जुआ खेले और हारे तो···
CLUB
पैसे को यह हाथ की मैल बराब
समझते हैं जी।
गरीब खुश न नजर आये तो···
ऐसी सूरत बना रखी है जैसे नानी मरी हो।
अमीर खुश न नजर आये तो···
साहब का मूड उखड़ा हुआ है।
गरीब शराब पिये तो···
सारी तनख्वाह मुई शराब में उड़ा देता है।
अमीर शराब पिये तो···
बड़े सोशल आदमी हैं बहुत रंगीन जिन्दादिल आदमी हैं।
गरीब की लड़की ट्यूशन पढ़ाने वाले के साथ भाग जाये तो···
रेलवे स्टेशन
मुंह काला कर गई और घर की नाक कटा गई।
अमीर की लड़की भाग जाये तो···
रेलवे स्टेशन
बहुत जिद्दी लड़की थी। ऊंच-नीच में भेद नहीं मानती थी अपने असूलों पर टिकी रही।

बन्द करो बकवास


हम तुमसे जुदा होके मर जायेंगे रो रो के।
बन्द करो बकवास, कल खुल जाएगी तो पी लेना।
WINE SHOP
DRY DAY
न तो कारवां की तलाश है न तो हमसफर की तलाश है।
बन्द करो बकवास, कारवां को और हमसफर को लिये बिना देखती हूँ तुम पिक्चर कैसे जाते हो।
ईंट की दुक्की पान का इक्का कहीं जोकर कहीं सत्ता है, सुनो जी यह कलकत्ता है।
बन्द करो बकवास और यह कौन है जिसने मेरे सारे पत्ते बता दिये।

लेखक बनने का उन्माद

कन्हैयालाल कपूर

मित्रों ने समझाया, बजुर्गों ने नसीहतें कीं कि बेटा इस खतरनाक इरादे से बाज आ जाओ; लेकिन यहाँ तो लेखक बनने का भूत बुरी तरह सिर पर सवार था। एक दुनिया देखे हुए बुजुर्ग कहने लगे—'साहबजादे ! हमने आज तक किसी लेखक को फूलते-फलते नहीं देखा। लेखकों की हालत तो यह है कि 'अकबर इलाहाबादी' की यह पंक्ति थोड़े से संशोधन के साथ उन पर बिल्कुल फिट उतरती है कि :

कटी उम्र मुफलिसी में, मरे अस्पताल जाकर

(अस्पताल यानी खैराती अस्पताल) हमारा तजुर्बा बताता है कि बड़े से बड़े लेखक का बेंक बैलेंस सिफर से आगे नहीं बढ़ा। अपना मकान तो क्या लेखकों को मकान का किराया देने की भी सामर्थ्य नहीं होती। प्रसिद्ध उर्दू शायर मीर तकी 'मीर' की प्रसिद्ध नज्म 'क्या लिखूं 'मीर' अपने घर का हाल' तो तुमने जरूर पढ़ी होगी। यह नज्म उर्दू पाठ्यक्रम में इसीलिए शामिल की जाती है कि नवयुवक इसे पढ़ कर इबरत पकड़ें। 'गालिब' की तंगदस्ती को कौन नहीं जानता। सारी उम्र इस आशा में जीते रहे कि एक दिन उनकी फ़ाकामस्ती रंग लाएगी और वह रंग लाई तो यह कि हजरत को जेल खाने भिजवा दिया। भले आदमी ! अब भी समय है। लिखने-लिखाने से तोबा करो और दही-बड़ों की दुकान खोल लो।'

एक मित्र ने एक प्रसिद्ध शायर का किस्सा सुनाया कि निरन्तर फाकों और अन्य तरह-तरह की मुसीबतों के कारण वे पागल हो गए। जब पागलखाने से वापस आए तो किसी ने पूछा, 'क्यों जनाब ! क्या सचमुच आपका दिमाग चल गया था ?' हंस कर बोले, 'मियां, दिमाग था ही कहां जो चल जाता। दिमाग होता तो इस मुल्क में शायरी ही करते !'

लेकिन इन बातों का हम पर कुछ प्रभाव न हुआ; लेखक बनने की धुन जो समाई थी। एकांत में हवाई किले बनाया करते थे कि एक दिन हमारा नाम भी शेक्सपियर, कालिदास, गालिब और प्रेमचन्द के साथ लिया जाएगा। लोग हमारी रचनाएं छाती से लगाए फिरेंगे। रहती दुनिया तक हमारा नाम रहेगा इत्यादि-इत्यादि। अतएव हमने भगवान का नाम लेकर लेखक बनने का निश्चय कर लिया। यह समझते हुए कि हास्य-व्यंग्य का क्षेत्र सूना पड़ा है, हमने व्यंग्य-लेखक बनने की ठान ली।

पहला व्यंग्य-लेख अपने मुख्याध्यापक महोदय पर लिखा कि स्वर्गवासी विचित्र प्रकृति के महानुभाव थे। पढ़ाने पर आते थे तो दिन-रात पढ़ाए चले जाते थे और पीटने का शौक चर्राता तो विद्यार्थियों को पीट-पीट कर अधमुआ कर देते थे। हमने जी में कहा, प्रत्येक फिरऔन के लिए खुदा एकाध मूसा जरूर पैदा करता है—चलिए इस फिरऔन-प्रकृति मुख्याध्यापक के कस-बल निकालने का कर्तव्य हम पूरा करते हैं। वैसे भी वे भगवान को प्यारे हो चुके थे इसलिए जवाबी हमले का भय नहीं था। यह लेख लिखने के बाद हम 'जड़ी-बूटी' नामक पत्रिका के सम्पादक के दफ्तर में पहुंचे और बड़े अदब से उनसे कहा, 'आप हर अंक में बिच्छू-बूटी, बनफशा और चिरायता पर पन्ने काले करते हैं। मुंह का मजा बदलने के लिए एकाध व्यंग्य-लेख भी हो जाए तो क्या बुरा है ?'

सम्पादक महोदय को वह लेख बहुत पसन्द आया। संयोग से वह भी उसी मुख्याध्यापक के हाथों कई बार पिट चुके थे। उन्होंने लेख छापने का वायदा कर लिया।

हमने डरते-डरते पूछा, 'पारिश्रमिक क्या होगा ?'

माथे पर बल डाल कर बोले, 'इसे प्रकाशित कराने के लिए आपको पच्चीस रुपये पेशगी देने होंगे।'

'लेकिन साहब ! यह लेख है, विज्ञापन नहीं है कि आप रुपयों की मांग कर रहे हैं।'

'यह आपकी प्रसिद्धि का विज्ञापन है। इसके अलावा हमारी पत्रिका की पालिसी भी यही है कि हम पारिश्रमिक लिए बिना किसी नये लेखक की रचना प्रकाशित नहीं करते।'

उनको काफी मिन्नत-समाजत की कि पारिश्रमिक या पारितोषिक कुछ कम करें। आखिर वे बीस रुपये पर मान गए। जब लेख छपा तो पत्रिका 'जड़ी-बूटी' की दस बारह प्रतियां खरीद कर हमने अपने मित्रों में बांट दीं। उन्होंने हमारे लेख की प्रशंसा की और कहा कि व्यंग्य कसने में हमें कमाल प्राप्त है। इस प्रोत्साहन का परिणाम यह हुआ कि हमने सभी मित्रों पर व्यंग्य कसना शुरू कर दिया और शीघ्र ही उनसे हाथ धो बैठे। ये लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। पारिश्रमिक किसी लेख का नहीं मिला। हाँ, जिस अंक में लेख छपता था, उसकी एक प्रति अवश्य मिल जाती थी।

जब दस-बारह लेख छप गए तो खयाल आया कि क्यों न उन्हें पुस्तक-रूप में प्रकाशित किया जाए। पाण्डुलिपि लेकर प्रकाशकों की दुकानों के चक्कर काटने लगे। जिस प्रकाशक से प्रार्थना की, टका-सा उत्तर मिला, 'लेख तो बुरे नहीं, लेकिन हमारे काम के नहीं।'

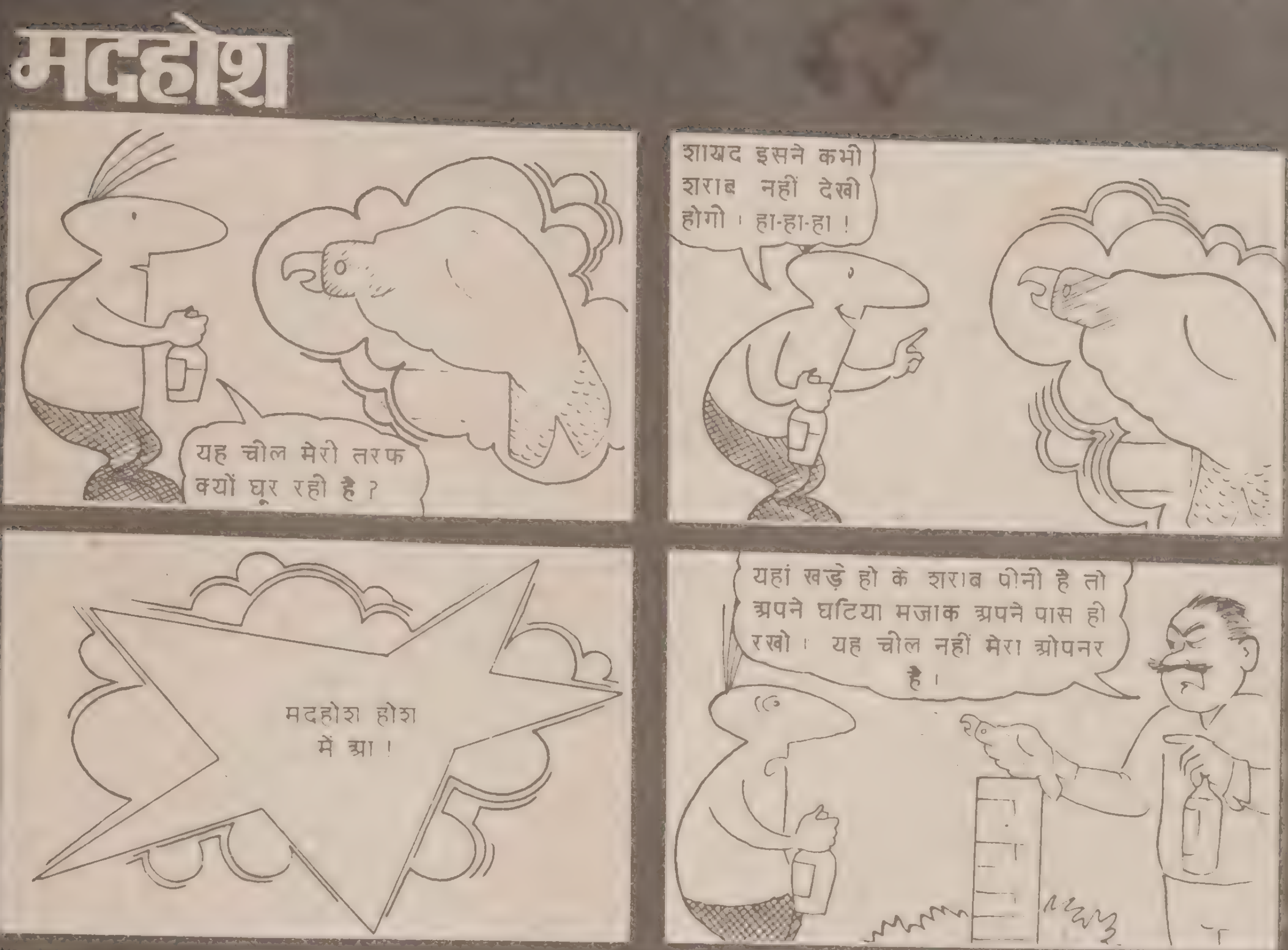
जब पूछा कि काम के लेख कैसे होते हैं, तो बताया गया—'जिन्हें पढ़कर रातों की नींद हराम हो जाए। मुंह से अपने-आप राल टपकने लगे या बदन के रोंगटे खड़े हो जाएं।' उनका आशय प्रेम-प्रणय तथा सनसनीपूर्ण लेखों से था। बहुत निराश हुए। एक दिन हमारे मित्र पण्डित-जी ने यह शुभ समाचार दिया कि उन्होंने शेख साहब को हमारी पुस्तक छापने पर राजी कर लिया है। शेख साहब की दुकान पर पहुंचे। वहां अजीब बहार देखी कि ग्राहकों का तांता बंधा हुआ है। शेख साहब के हाथ में तराजू है और वे तोल-तोलकर पुस्तकें बेच रहे हैं। किसी ग्राहक ने पूछा, 'शेख साहब ! 'मुर्गीखाना' का भाव क्या है ?' शेख साहब ने तुरन्त उत्तर दिया, 'सिर्फ दो रुपये किलो।'

'और उस्तादे-दर्जियों ?'

'वह जरा महंगी है, ढाई रुपये किलो।'

यह माजरा देखकर हम बहुत चकित हुए कि इस दुकान पर पुस्तकें तोलकर बेची जाती हैं। जब शेख साहब को जरा फुर्सत मिली तो पण्डित जी ने हमारा परिचय कराते हुए कहा, 'आप प्रसिद्ध व्यंग्य-लेखक हैं।'

शेख साहब ने बड़ी बेरुखी से कहा,



'अच्छा है, तो फिर ?'

'आपके यहां से एक पुस्तक छपवाना चाहते हैं।'

'मसविदा दिखाइए।'

हमने मसविदा शेख साहब के हाथ में दे दिया। उन्होंने तुरंत उसे तराजू के एक पलड़े में रखा। दूसरे में शायद चार सौ ग्राम के बाट रखे और फरमाया, 'तीन रुपये फी सौ ग्राम के हिसाब से हम बारह रुपये दे देंगे। जुम्ला हुकूक यानी छापने के सारे अधिकार हमारे रहेंगे।'

उनकी ये शर्तें सुनकर पैरों तले से धरती खिसक गई। अपना-सा मुँह लेकर चले आए। दो हफ्ते बाद किसी प्रकार एक प्रकाशक पांच प्रतिशत रायल्टी पर छापने को तैयार हो गया। पुस्तक छपी। उसकी प्रशंसा भी हुई। हम प्रसन्नता से फूले न समाए कि वर्ष के अन्त में माकूल रायल्टी मिलेगी और उन समस्त सज्जनों की भविष्य-वाणियां गलत सिद्ध होंगी जो हमें लेखक बनने से रोकते थे। इकतीस दिसम्बर को हम प्रकाशक महोदय की सेवा में उपस्थित हुए और बड़ी विनम्रता से रायल्टी मांगी।

रायल्टी का नाम सुनते ही उनपर जैसे बिजली गिर पड़ी। आंखों में खून उतर आया। गरजकर बोले, 'इतने ही जल्दबाज थे तो किसी और से छपवा ली होती।'

इसके बाद उन्होंने अपने एक कर्मचारी से हिसाब का रजिस्टर लाने को कहा। रजिस्टर खोलकर बोले—'देखिए साहब ! एक हजार छपी थी। सौ कापियां तो बाईंडर के यहां खराब हो गईं। डेढ़ सौ रिव्यू के लिये भिजवाई गईं। अढ़ाई सौ पिछली बरसात में नष्ट हो गईं। बाकी बचीं पांच सौ। उनमें से केवल सात बिकी हैं। आपकी रायल्टी हुई एक रुपया उन्नीस पैसे। अगर आप वह लेना चाहते हैं तो बड़ी खुशी से ले जाइए।'

पहली पुस्तक छपवाने का जो कटु अनुभव हुआ उससे हमने यह सीख ली कि भविष्य में सोच-समझकर प्रकाशक का चयन किया करेंगे। लेकिन बाद में कई एक पुस्तकें छपवाने के बाद हमें स्वीकार करना पड़ा कि चाहे प्रकाशक रंग-रूप के लिहाज से कितने ही भिन्न क्यों न हों, जहां तक रायल्टी देने का प्रश्न है, वे सब एक समान होते हैं। हद तो यह है कि वायदे भी एक जैसे करते हैं।

शायद किसी शायर ने प्रकाशकों के बारे में ही यह शेर कहा था—

तेरे वादे पे सितमगर कुछ और सब्र करते
अगर अपनी जिन्दगी का हमें एतिबार होता।

जब निरन्तर तकाजों पर भी कुछ प्राप्त न हुआ तो जायदाद बेच-बेचकर गुजारा करने लगे। एक साल 'लाल कोठी' बेचनी पड़ी तो दूसरे साल 'पीली कोठी' की बारी आई। फिर बाग-बगीचों का नम्बर आया। इसके बाद घर का सामान और बरतन नीलामघर पहुंचने लगे।

आखिर साहित्य-सेवा से तौबा करके हमने एक कालेज में नौकरी कर ली। बचपन में एक दोहा सुना था जिसका भावार्थ था कि यदि मुझे मालूम होता कि प्रीत करने से दुःख होता है तो मैं नगर-नगर में ढिंढोरा पिटवाती कि कोई व्यक्ति प्रीत न करे।'

हमारा भी कई बार जी चाहा कि हर शहर में ढिंढोरा पिटवा दें कि कोई व्यक्ति लेखक बनने की कोशिश न करे—यदि उसके पास गालिब और प्रेमचन्द ऐसा जी-गुर्दा नहीं और यदि वह फाकामस्ती को अपना आचरण या नित्यक्रम नहीं बना सकता। ●

पृष्ठ १३ से आगे

मधु को अब भी विश्वास नहीं था कि सुशील ने हत्या की है।

जिन्दगी के हर मोड़ पर ही वह यही सोचती रही कि सुशील हत्यारा नहीं हो सकता। अदालतों के फैसले भी उसके दिल से यह बात नहीं निकलवा सके। जब मुकद्दमे की सुनाई शुरू हुई थी और सुशील के साथ मधु के पिता और कुछ किसान भी पकड़ लिए गये तो उसे सन्देह हुआ था कि शायद सुशील ने ही हत्या की हो। लेकिन जब और सब लोग छूट गये तो यह सन्देह मिट गया। वह बार-बार सोचती कि उस रात जब फायर की आवाज सुनी थी सुशील उस के पास था। फिर उसने हत्या की कैसे? इसके बाद गोली की और आवाज सुनाई नहीं दी थी। वे लोग कौन थे जो सुशील के जाने के बाद ही उसके पीछे आये थे और घर के सामने पलभर रुकने पर चले गये थे? वह जानती थी कि उसे भी गवाही देनी पड़ेगी।

उसे बड़ा आश्चर्य हुआ था जब सरकारी वकील ने उसे गवाही के लिए बुलाया और सुशील ने डटकर उसका विरोध किया। उसने रंजन से भी कहा था और रंजन ने भी कोशिश की थी, लेकिन कोई परिणाम न निकाला।

नरेन्द्र सिन्हा के यहां वह शुरू में कई बार गई थी और शीला से सुशील के बारे में कहा था। उन लोगों ने बड़ी कोशिशें की थीं, लेकिन अन्त में शीला ने ऐसी बातें कहीं जिन्हें न तो वह सुनना चाहती थी और न बर्दाश्त कर सकती थी। इसके बाद वह उनके यहां नहीं गई।

वह अपने आप को अकेला महसूस कर रही थी। सुशील की याद ही उसके जीवन का एक मात्र सहारा रह गई थी। रंजन लगातार यही कोशिश करता रहा कि वह अपने आपको अकेली न महसूस कर पाए। वह मधु को हर तारीख पर कचहरी ले जाता था। रोजाना घर आता था और जितनी देर वहां रहता था सुशील की बातें ही करता रहता था और अगर मधु की आंखों में आंसू आ जाते तो स्वयं भी रोने लगता।

रंजन का स्वास्थ्य, गिर गया था। टेनिस के इतने अच्छे प्लेयर होने के बावजूद वह आधा रह गया था। एक दिन मधु ने उससे कहा था—

'रंजन भाई, जरा अपना ख्याल तो कीजिए!'

'क्या ख्याल करूँ मधु? जिन्दगी होटल का नम्बर बन गई है। जिस दिन सुशील आयेगा मैं ठीक हो जाऊँगा।'

'इसी तरह सोचते रहे तो वह आयेंगे नहीं। जितनी कोशिश आपसे हो सकती है आप कर ही रहे हैं।'

'मैं जितनी कोशिश करूँ, कम है। वह मेरी ही वजह से तो—।' रंजन कहते-कहते रुक गया। फिर मधु की ओर देखकर बोला—

'तुमसे सुशील ने कुछ कहा तो नहीं?'

'किस बारे में?'

'नादिर खां की हत्या के बारे में?'



'यही कह रहे थे कि उसने तुम्हारी इज्जत पर हाथ डालना चाहा था इसलिए मैंने उसे मार डाला। क्यों कोई विशेष बात है क्या?'

रंजन कुछ देर चुप रहा और टकटकी बांधे मधु की ओर देखता रहा फिर एक ठंडी सांस भरकर कहा—

'सुशील ने उसकी हत्या तुम्हारी वजह से नहीं, मेरी वजह से की है। वह मेरे लिए बहुत बड़ा खतरा था। उस रात वह मेरी हत्या करने के लिए आया था।

'रंजन भाई, मैंने फायर की आवाज पहले सुनी थी।'

'हां, नादिर खां ने मुझ पर गोली चलाई थी।'

'लेकिन दूसरी गोली की आवाज मैंने नहीं सुनी।'

'किसी वजह से नहीं सुनी होगी।' रंजन ने कहा, 'अच्छा, अब मैं चलूं। हां, आज सीमा की चिट्ठी आई है।'

'मुझे उनका पता दे दीजिएगा। जब से गई हैं, मैं उन्हें एक भी पत्र नहीं लिख पाई।'

'अच्छा और कोई बात? कोई जरूरत?'

'कोई नहीं!'

यह उन दिनों की बात थी जब सुप्रीम कोर्ट में फैसला सुनाया जाने वाला था। मधु को विश्वास था कि सबसे बड़ी अदालत से सुशील को न्याय मिलेगा। वह किसी भी मूल्य पर यह मानने के लिए तैयार न थी कि सुशील ने हत्या की है।

लेकिन सुप्रीम कोर्ट का फैसला भी सुशील के विरुद्ध रहा फिर गवर्नर के यहां प्राणदान की याचिका प्रस्तुत की गई तो वहां भी स्वीकार नहीं हुई।

रंजन का उतरा हुआ चेहरा दिन-पर-दिन उदास होता गया। कई बार तो उसे मधु के घर पर ही बेहोशी का दौरा पड़ गया।

खुद मधु की अवस्था अच्छी नहीं थी। लेकिन रंजन का हाल देखकर उसे बहुत ही दुःख होता था। वह कोशिश करती थी कि किसी तरह रंजन के दुःख को भुलाने में ही सहायक हो सके।

इसलिए वह रंजन का मन बहलाने के लिए कभी-कभी हँस कर भी बात कर लिया करती थी। केवल एक ही आशा थी कि राष्ट्रपति के यहां से हैबियस कार्पस मन्जूर हो जायेगी। लेकिन समय बीतता गया और इस अपील का परिणाम क्या हुआ, वह जान नहीं पाई।

बी० ए० करने के बाद उसने एल० टी० कर लिया था और एक स्कूल में टीचर बन गई। अब रंजन से सहायता लेते हुए उसे शर्म लगती थी। जब रंजन उसके लिए साड़ियां और कपड़े लाता उसका जी बहुत खिन्न होता।

वह नियम से हर शनिवार को सुशील से मिलने जाया करती थी। लेकिन पन्द्रह

(शेष पृष्ठ ४० पर)



ग्रगले सप्ताह इस पृष्ठ पर एक ग्रौर लाजवाब सवाल देखिये ।

पृष्ठ ३८ से आगे

मिनट में और वह भी रंजन की उपस्थिति में, क्या बातें हो सकती थीं ? और सुशील का चेहरा आखों के आगे झाँक उठता था। कभी-कभी बैठे-बैठे लगता, कि सुशील उसके पास बैठा है—हँस रहा है—बातें कर रहा है। सोने के लिए लेटती तो सुशील की आवाज उसके कानों में गूंजने लगती।

उसी जमाने में एक दिन—

उसे सुशील का एक लम्बा पत्र मिला। उसने झूम-झूमकर उसे पढ़ा और हर पंक्ति कई बार पढ़ी। कभी-कभी उसे चूम भी लिया। उसका चेहरा आन्तरिक प्रसन्नता से खिल उठा। लेकिन जब वह अन्तिम पंक्तियों पर पहुंची तो उसके चेहरे का रंग उड़ गया। आँखों से आँसू बहने लगे।

वह मन-ही-मन कह उठी—'सुशील, मुझसे मेरी जिन्दगी माँग लेते तो मुझे कभी इन्कार न होता। आपने यह क्या माँगा है ?'

और फिर इस बिचार ने उसकी सिसकियाँ तेज कर दीं कि सुशील अब जीवित नहीं बचेगा। उसे फाँसी हो जायेगी। उसने आंचल में अपना मुँह छिपा लिया और फूट-फूटकर रोने लगी। मन में एक हूक-सी उठ रही थी। आँसू भरी आँखों के आगे सुशील का चेहरा घूम रहा था। जी चाहता था कि रोती रहे। इतनी रोये कि जिन्दगी उसका साथ छोड़ दे।

वह अकेली थी। घर में कोई न था। माँ और बापू गाँव गये हुए थे। एकाएक उसे ऐसा लगा जैसे सुशील उसके पास खड़ा हो उससे कह रहा हो। उसका हाथ मधु के कन्धे पर रखा हो।

वह चौंक पड़ी। उसने नजर उठाकर देखा, सामने रंजन खड़ा था। उसकी आँखें डबडबाई हुई थीं और उसके दोनों हाथ मधु के कन्धों पर थे।

मधु बिलख-बिलखकर रोने लगी। रंजन ने तसल्ली दी, लेकिन मधु के आँसू नहीं थमे। रंजन ने मधु के आँचल से आंसू पोंछते हुए कहा—'अच्छी मधु ! रोओ मत —वरना तुम्हारी सौगन्ध मेरा दम घुट जायेगा।'

मधु चुपचाप उठकर बाथरूम में चली गई। मुँह धोया, पानी पिया। लेकिन जब वापस आ रही थी, उसे कुछ अजीब-सा लग रहा था।

उसके कानों में सुशील के पत्र की पंक्तियां गूंज उठीं जिनमें सुशील ने लिखा था कि वह रंजन के साथ विवाह कर ले।

वह कमरे में आई और सिर झुका कर बैठा गई।

'मां और बापू कहाँ हैं ?' रंजन ने पूछा।

'गाँव गये हैं।'

'आज सीमा आ रही है।'

'किस समय ?'

'रात की गाड़ी से आयेगी। कल सुबह शहर से यहाँ आ जायेगी, अब कल मिलेंगे।



'अच्छा ! मधु घिसे-पिटे हुए लहजे में बोली, 'कल जेल न चलिएगा ?'

रंजन ने कुछ कहना चाहा लेकिन अचानक उसे याद आया। उसके होंठ हिलकर रह गये। उसने जेब से एक लिफाफा निकालकर मधु की ओर बढ़ाते हुए कहा।

'इसे पढ़ लेना। मैं अभी आ रहा हूं। दो तीन घंटे में···' वह उठकर चला गया।

मधु ने लिफाफा खोला। उसमें तीन पत्र थे। एक जेलर का पत्र रंजन के नाम था। उसने लिखा था—

आदरणीय महोदय !

आदेश आ गये हैं। मुझे सूचना देते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है, लेकिन ड्यूटी है, क्या करूँ ? अगले सप्ताह आप लोग नहीं मिल सकेंगे। अगर स्वयं सुशील ने इच्छा प्रगट की तो वह केवल आपको देख ही सकेंगे। बात नहीं कर सकेंगे।

मेरी ओर से जितनी सम्भव थीं, उन्हें सुविधाएँ पहुँचाई गईं। कानून से मैं भी मजबूर हूँ।

आपका—
'विक्रम सिंह'

दूसरा पत्र सुशील ने रंजन को लिखा था—

रंजन भाई !

जीवन में आपसे जो कुछ माँगा, वह मिला। एक अन्तिम इच्छा है—वह भी पूरी कर दीजिए ! मुझे मालूम हो चुका है कि सारे रास्ते बन्द हो चुके हैं। मैं चाहता हूं कि आप मधु को अपना लें। उससे विवाह कर लें। मेरी इच्छा यह है कि जो रात मेरे जीवन की अन्तिम रात हो, वह रात आपकी सुहागरात हो। मैं अपने सीने पर कोई बोझ लेकर इस दुनिया से नहीं जाना चाहता। आप लोगों का दुःख बोझ बना रहेगा। मैंने मधु को भी पत्र लिखा है। उसे भी यही लिखा है। मुझे विश्वास है कि आप मेरे लिए यह अन्तिम त्याग अवश्य करेंगे।

आपका—
'सुशील'

तीसरा पत्र रंजन ने मधु के नाम लिखा था—

मधु !

मैं इस समय बहुत ही दुःखी हूं। लगता है जैसे मैं खुद मरने वाला हूं। कोई भी बात अच्छी नहीं लगती। बस सुशील की बातें अच्छी लगती हैं। सुशील ने जो कुछ लिखा है। कुछ भी हो, उसकी इच्छा को पूरा करना मैं अपने जीवन का एकमात्र कर्तव्य मानता हूं। सुशील का पत्र पाने के बाद से मुझे अब सुशील के सिवाय और कोई याद नहीं रहा है। वह मेरा जीवन था और वह तुम्हें अपनी जिन्दगी कहता था इसलिए उस के जाने के बाद और उसकी इच्छा के अनुसार अब तुम ही मेरी सब कुछ हो।

'रंजन'

मधु ने पत्र पढ़कर लिफाफे में बन्द कर दिये और सोच में डूब गई। फिर वह उठी और उसने चाय बनाई। टोस्ट सेके तथा उन पर मक्खन लगाया। खजूरें तलीं और सारी चीजें ट्रे में सजाकर उस कमरे में ले आई।

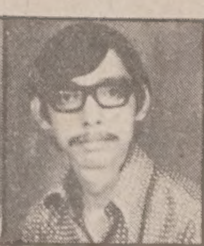
क्रमशः



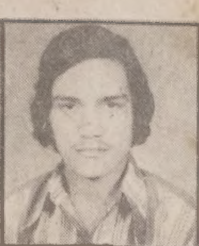
शिवनाथ स्याल, ११/२६३, गीता कालोनी, दिल्ली, २३ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, टिकट संग्रह, गाने सुनना, रेडियो सुनना।



संजय चतुर्वेदी, ४७ प्रिन्स यशवंत रोड, इन्दौर, १३ वर्ष, घूमने जाना, पिक्चर देखना, रौब जमाना, दूसरों को बहकाना।



साबिर रेजा खां वाहीदी, न्यू भीलेज जामाडुबा धनबाद (बिहार), २० वर्ष, उपन्यास पढ़ना, क्रिकेट खेलना, गाना गाना।



चन्द्र प्रकाश सोनी, शाहबाद वार्ड बारां (राज०), २० वर्ष, विदेशी यात्रा करना, दोस्ती करना, स्केटिंग करना, कहानियाँ लिखना।



हरमीत सिंह लूथरा, ए०/३५,४०८ मधुगिरी, एस० टी० रोड, चेम्बूर बम्बई, १८ वर्ष, दूध वाले भइये की धोती खींचना।



एस० एस० पठान, अशरफी बुक डिपो नया बस स्टेण्ड देवास, २६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, सबके साथ भलाई करना, पढ़ना।



कैलाश गर्ग, २८, बीमा नगर इन्दौर (म० प्र०), १६ वर्ष पत्र-मित्रता करना, हार्मो नियम बजाना, गाने गाना और सुनना।



श्याम बिहारी शर्मा, चौधरी मोहल्ला गुना (म० प्र०), १८ वर्ष, किताबें पढ़ना, पढ़ने में खूब परिश्रम करना, हंसना-हंसाना।



अनिल सांवले, मकान नम्बर २१-३-२०५, मूसा बावली, हैदराबाद, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना।



सुशील कुमार सेठिया, रवी टेक्सटाइल २०८, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता, १८ वर्ष, डाक टिकट संग्रह, उल्लू बनाना।



मनोज कुमार मन, सिपाही टोला, पूर्णियां, २० वर्ष, वालीबाल खेलना, पुराने गीत गाना, रेडियो सुनना, पत्र आदान-प्रदान करना।



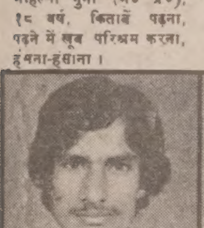
रमेश कुमार चौहान, द्वारा शान्ति लाल एण्ड संस श्याम टाकिज के सामने बिलासपुर (म० प्र०), १७ वर्ष, कार्टून बनाना।



रमेशचन्द्र 'देव' गांव व डाकखाना जनौली, तहसील पलवल, गुड़गावां (हरियाणा), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पढ़ना।



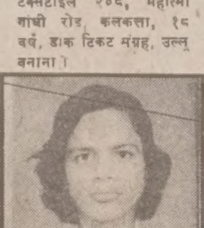
चन्द्र प्रकाश, २३२३, नेहरू कालोनी, हाथरस (उ० प्र०) १८ वर्ष, फिल्में देखना, गीत सुनना, पुस्तकें पढ़ना, सबका आदर करना।



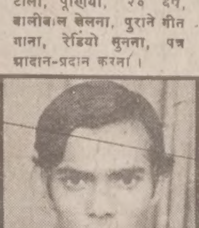
रफी अहमद, मौहल्ला हुसैन गंज, वार्ड नम्बर २०, सीकर (राज०), १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, बड़ों का आदर करना।



निरंजन कुमार साहू द्वारा दुःखी लाल साहू, राजवाड़ी रोड, झरिया, २० वर्ष, लोगों को बोर करना, दादागीरी दिखाना।



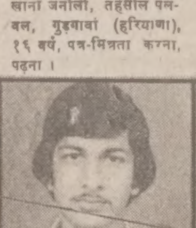
निरंजन कुमार डोकविदा, ओनकार मल हरर मल, जम्मू, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पढ़ना, फिल्में देखना, हंसी-मजाक करना।



जलाल अहमद शेख मोमिन द्वारा मजहर साइकिल सर्विस माता चौक, मनावद, १८ वर्ष, फुटबाल खेलना, हाकी खेलना।



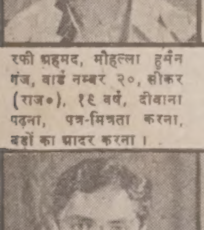
उजागर जी 'प्रेम' पोस्ट आफिस पाढ़र, जिला गांवा (म० प्र०), २१ वर्ष, पत्र मैत्री करना, पत्रिका पढ़ना रेडियो सुनना।



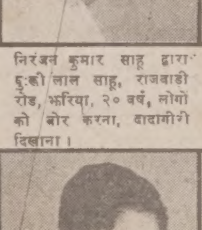
प्रदीप कुमार सिन्हा, ८-ब, इन्दू पार्क, चार बंगला, अन्धेरी बम्बई, १८ वर्ष, फोटोग्राफी करना, पत्र-मित्रता करना।



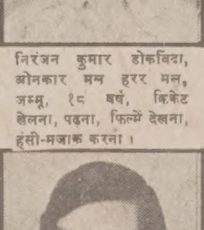
कंवरजीत सिंह 'छनवाल' मकान नम्बर ४१०, सैक्टर १५ ए० चण्डीगढ़ (पंजाब) १७ वर्ष, पढ़ना हर पत्र का जवाब देना।



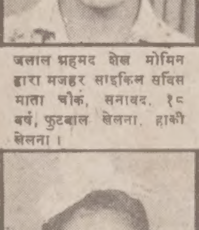
बिनोद कुमार अग्रवाल, जज बाजार, दार्जलिंग, २५ वर्ष, फिल्में देखना, घूमना, फिरना, स्वास्थ्य का खास ध्यान रखना।



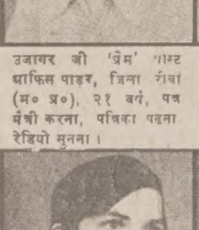
ईश्वर चन्दवानी, खारी खुई अजमेर, १४ वर्ष, सिनेमा देखना, रेडियो सुनना, छोटे बच्चों से प्यार करना और अच्छी शिक्षा देना।



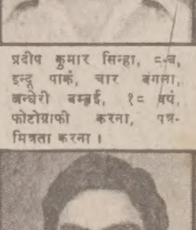
वीरिन्दर बांसल, ३२२०/२, डा० करीम उलाह, मौहल्ला सनौरी गेट, पटियाला (पंजाब), १८ वर्ष, सिनेमा देखना।



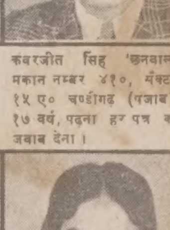
सुखविन्दर सिंह, मकान नम्बर २६४२/१६६, चण्डीगढ़, १४ वर्ष, किताबें पढ़ना, पैसे जोड़ना और उन्हें ठीक तरह खर्च करना।



सूबेसिंह सैनी, गांधी सीड स्टोर, हांसी, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, बांसुरी बजाना सीखना, गाने गाना तथा खुश रहना।



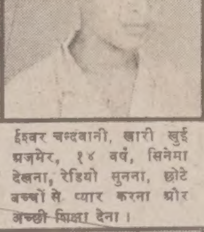
राजेश कुमार तनेजा, आर० के० एजेन्सी, आचारियों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पढ़ना।



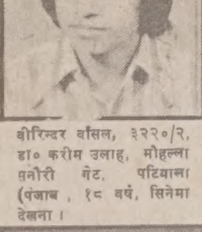
अशोक कुमार, बालाजी २६६/२०, जवाहर मौहल्ला अजमेर, २२ वर्ष, मासिक पत्रिकायें पढ़ना, क्रिकेट खेलना।



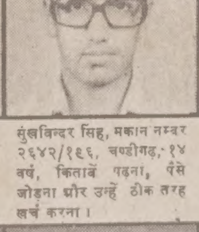
अरुण कुमार उपाध्याय, डी० एल० एम० एस० द्वितीय वर्ष, बी० एल० मैडीकल कालिज भरतपुर, १८ वर्ष, नए मित्र बनाना।



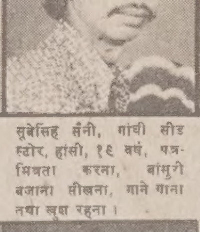
महेश कुमार तनरेजा द्वारा श्री सेठ रघुमल लल्लू पोखर नगर, २८ वर्ष, डाक टिकट संग्रह करना, घूमना-फिरना, पत्र-मित्रता करना।



स्नेह प्रवीण पांचाल, २११/४ गली नम्बर ८, पदम किशन गंज दिल्ली, पत्र-मित्रता करना, हस्तरेखाओं का अध्ययन करना।



रतन लाल पुजारी, ३६४ जी० टी० रोड, रिषड़ा, जिला हुगली, १७ वर्ष, मुकेश का संगीत सुनना, धर्मेन्द्र की फिल्म देखना।



धर्मपाल अरोड़ा उर्फ राजा, मकान नम्बर १४०, वार्ड नम्बर ८, पीरजी मौहल्ला रामा कालोनी रोहतक, १८ वर्ष, मजाक करना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______

पता ______

आयु ______ शौक ______

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

८ मार्च से १४ मार्च ७६ तक

मेष : १० मार्च तक आय उत्तम होगी, व्यय यथार्थ, यात्रा में सुख, एवं सफलता, परिवार से सुख, ११-१२ मार्च को व्यर्थ के झंझटों से परेशानी, व्यय अधिक, घरेलू समस्याएं बनती बिगड़ती रहेंगी ।

वृष : १० मार्च तक यात्रा में हानि का भय, आय व्यय समान, सुख सुविधाओं पर व्यय, धर्म में रुचि, ११-१२ मार्च के दिन अनुकुल रहेंगे, आय में वृद्धि, व्यय कुछ कम, प्रियजनों से मेल मिलाप, काम पूरे होंगे ।

मिथुन : १० मार्च तक दौड़धूप अधिक और सफलता कम, यात्रा के लिए दिन अनुकूल है, काम बन जाएंगे, लाभ खर्च बराबर ११-१२ मार्च को यात्रा छोड़ दें, चोट या हानि का भय है, अन्य हालात ठीक चलेंगे, आय बढ़ेगी ।

कर्क : १० मार्च तक चलते कामों में अड़चन, या देरी से पूरे होंगे, सेहत खराब, परिवार से सुख, ११-१२ मार्च परिश्रम अधिक, किसी प्रियजन से आयोग या वियोग, यात्रा आसपास की, व्यर्थ का वाद-विवाद रहेगा ।

सिंह : १० मार्च तक समय अनुकूल रहेगा, प्रियजनों से मिलाप, विरोधी मुंह की खायेंगे, ११-१२ मार्च के दिन ठीक नहीं, सेहत अचानक बिगड़ेगी, पेट या आंखों में कष्ट, यात्रा भी न करें, व्यय बढ़ेगा ।

कन्या : व्यय अधिक, यात्रा में परेशानी, मन उदास रहेगा, भाई बहनों से सहयोग पायेंगे, ११-१२ मार्च साहस बढ़ेगा, व्यापार से यथार्थ लाभ, राजकाज में सफलता एवं अफसर वर्ग भी प्रसन्न रहेगा ।

तुला : १० मार्च तक कामों में सफलता पाते रहेंगे, आय बढ़ेगी, यात्रा सफल, रुका हुआ पैसा भी मिल सकता है, ११ मार्च से व्यय बढ़ेगा, नई-नई योजनायें सामने आयेंगी, विरोधी अकारण हो बनेंगे, यात्रा छोड़ दें ।

वृश्चिक : ८ मार्च से बिगड़े काम बनेंगे, व्यापार सुधरेगा, सुख साधनों पर व्यय करेंगे, कमजोरी या सुस्ती छाई रहेगी, ११-१२ मार्च आय में वृद्धि, व्यय यथार्थ परन्तु घरेलू झंझटों से परेशानी, यात्रा में लाभ होगा ।

धनु : ८ मार्च से हालात अच्छे होंगे और शुभ कामों में रुचि बनेगी, कामों में सफलता, धन लाभ भी बढ़ेगा, यात्रा में सुख, ११ मार्च से व्यापार में उन्नति, आर्थिक स्थिति में दृढ़ता आएगी, बिगड़े काम बनेंगे ।

मकर : १० मार्च तक यात्रा में कष्ट, उदासी छाई रहेगी, काम भी समय पर न बन पायेंगे, व्यय बढ़ेगा, ११ मार्च से वातावरण ठीक होगा और भाग्य भी साथ देने लगेगा, बिगड़े काम बनेंगे, यात्रा में सुख ।

कुम्भ : १० मार्च तक कोई शुभ सन्देश या किसी प्रियजन से मिलाप, मनोरंजन आदि पर व्यय, कामों में सफलता पायेंगे, ११-१२ मार्च स्त्री पक्ष से चिन्ता, सुस्ती या कमजोरी का प्रभाव रहेगा, कारोबार से लाभ बढ़ेगा ।

मीन : १० मार्च तक शत्रु से हानि का भय, ऋण की चिन्ता, अफसर वर्ग प्रसन्न रहेगा, अच्छे लोगों से मुलाकात होगी, ११-१२ मार्च को काम बनते रहेंगे, कठिनाईयां दूर होंगी यात्रा भी हो सकती है ।

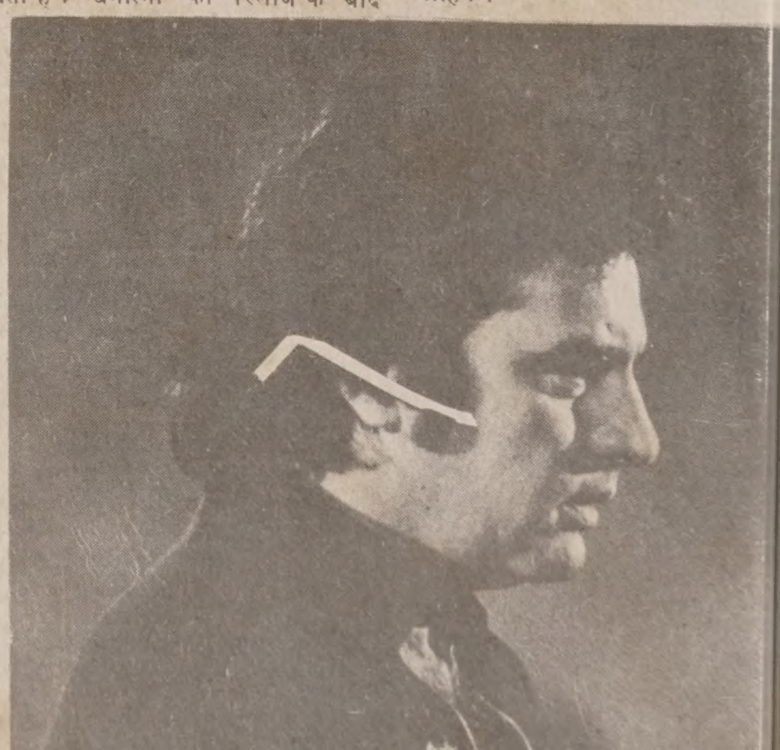
फिरोज खां

—विजय भारद्वाज

फिल्म उद्योग की मचलती लहरों में यह विशेषता रही है कि वह कभी किसी सितारे को ऊपर उठा देती हैं तो कभी किसी कलाकार को भंवर में डुबो देती हैं। फिल्म उद्योग के जाने माने आज कितने ही कलाकार ऐसे हैं जो इन लहरों की लपेट में आ चुके हैं। अपने जमाने के जाने माने अभिनेता राजेन्द्र कुमार कभी जुबली फलाकार के नाम से जाने जाते थे। इनकी एक साथ कई-कई फिल्में रिलीज होती थीं और हिट होती थीं। जिस फिल्म में यह होते थे उसको डिस्ट्रीब्यूटर अच्छे दामों पर मिल जाता था। लेकिन फिल्म उद्योग की जिस लहर ने राजेन्द्र कुमार ऊपर उठाया था उसी ने नीचे डूबो दिया। अपने जमाने का जुबली कलाकार दर्शकों द्वारा ही ठुकरा दिया गया। इसके बाद इसी तरह के उदाहरण में राजेश खन्ना का भी नाम लिया जा सकता है। राजेश खन्ना ने भी अपने समय में अत्याधिक प्रसिद्धि प्राप्त की। जवान लड़कियों के हसीन सपनों का वह देवता बन गया। लड़के लड़कियां उसके दीवाने हो गये लेकिन आज वह सुपर स्टार, केवल स्टार भी नहीं रहा। फिल्मी परम्परा ने उसे भी भुलवा दिया।

इन्हीं नामों में फिरोज खां का नाम भी आता है। 'धर्मात्मा' की रिलीज के बाद फिरोज खां का नाम धीरे-धीरे धूमि... लगा और फिर बिल्कुल ही मन्द पड़... इसमें कोई शक नहीं कि फिरोज खां न... एक अच्छे कलाकार ही हैं अपितु ... निर्देशक भी हैं। हर छोटी-बड़ी हीरो... साथ फिरोज खां अभिनय कर चुके हैं... अब इनका सितारा भी ऊंचाई के ... गहराई की तरफ अग्रसर है। यह भी ... परम्परा के शिकार हुए हैं। लेकि... परम्परा आखिर है क्या बला जो अच्छे... चर्चित कलाकार को अन्धेरे में खो दे... आज केवल फिरोज खां ही नहीं ऐसे... कलाकार हैं जो अभिनय क्षमता हो... भी फिल्मी पर्दे पर कम आते हैं या पसन्... किये जाते।

वास्तव में इसके पीछे है वह अ... जिसमें यह कलाकार बंध कर रह ग... इन्होंने अपना एक इमेज बना लिया... उसे स्वयं कभी तोड़ने की भी कोशिश... की। दर्शक एक जैसे अभिनय को ... बोर हो जाते हैं। और अन्त में व... कलाकार फ्लाप हो जाता है। देव... संजीव कुमार, जितेन्द्र, धर्मेन्द्र ने ... अभिनय को समय-समय पर बदल... शर्मीला धर्मेन्द्र पर्दे पर 'ही मैन' तक बन... यदि कलाकार अपनी कला को जिन्दा ... चाहता है और प्रसिद्धि चाहता है त... किसी विशेष इमेज में कैद नहीं ... चाहिये।





शत्रुघन सिन्हा और रीना राय


इन्सपैक्टर साहब, जबसे आप इस इलाके में आये हैं वैसे तो सब ठीक हो गया है, एक ही बुरी बात रह गई है। वह यह कि आवारा गर्दी और लोफरबाजी बढ़ गई है।
हैं? कौन करता है आवारा गर्दी? मुझे बता अभी ठीक कर देता हूं।
उदाहरण के लिए उल्लू को लीजिए। दिन भर सोता रहता है और रात भर जागता है। घूमता, उड़ता रहता है। रात भर कौन घूमते हैं? आवारा गर्द, लोफर ही तो। अब आप ही बताइये मैं गलत हूं।
मैं आज ही जाकर उल्लू को कहता हूं कि वह दिन को उड़े! रात को उड़ता हुआ दिखाई दिया तो मैं उसके पंख नोच लूंगा! उसकी ऐसी तैसी कर दूंगा।
पंच तंत्र
वह देख भालू उल्लू को रात को न उड़ने की चेतावनी दे रहा है। मैं कहता न था कि यह नया पुलिस इन्सपैक्टर बेवकूफ है। मेरी बातों में आ गया। अब रात को उल्लू को अपने खोह से बाहर नहीं निकलना होगा और हम रात भर धमा चौकड़ी मचा सकते हैं।
लेकिन सर
बस-बस मैंने एक बार कह दिया।
सबेरा हो गया! थोड़ी देर बाद मैं पेट्रोल पर जाऊंगा, अगर उल्लू सोता हुआ मिला तो डंडा उसके सिर पर मार कर उसे हमेशा के लिये ठंडा कर दूंगा, आवारा गर्द कहीं का।
उधर आज्ञा का पालन करने के लिये उल्लू दिन में उड़ने की कोशिश करता है, सूरज की रोशनी उसे अंधा किये है! पेट्रोल पर आते रीछ से टकरा जाता…
…और उल्लू के सुई से नुकीले पंजे रीछ की आंखें नोच लेते हैं!
शिक्षा—दूसरों के काम के समय में कभी दखल नहीं देना चाहिए।